काव्यरत्नाकर

प्रथम भाग

जिसको

श्रीयुत विद्वज्जन जेगीयमान सत्कीर्त्ति
कालिन् ए, आर, ह्वीनिङ्ग साहब एम, ए,
प्राचीनडैरक्टर बीरेश की अनुमति से
ज़िलह स्कूल खीरी के पद्ममाध्यापक
पण्डित मातादीन मिश्र ने बड़े परिश्रम से
नवीन और प्राचीन भाषाकाव्यग्रन्थों से सङ्ग्रह किया
और

श्रीमद्गुणिजन मानसोल्लासक
श्रीयुत जान्, सी, नैसफील्ड साहब एम, ए,
अवध देशीय पाठशालाध्यक्ष बीरेश की आज्ञा से
पुस्तकालयों के साहित्य के हेतु

लखनऊ
मुंशी नवलकिशोर यन्त्रालय में
पण्डित रामरत्नवाजपेयि के प्रबन्ध से छपा ।
जनवरी सन् १८९६ ई०

कवित्तरत्नाकर

प्रथम भाग

—————

जिसको

श्रीयुत विद्वज्जन जेगीयमान सत्कीर्त्ति

कालिन् ए, आर, ब्रौनिङ्ग साहब एम, ए,

प्राचीनडैरक्टर वीरेश की अनुमति से

ज़िलअ़ स्कूल खीरीके पञ्चमाध्यापक

पण्डित मातादीन मिश्र ने बड़े परिश्रम से

नवीनऔरप्राचीन भाषाकाव्यग्रन्थोंसे सङ्ग्रहकिया

और

श्रीमद्गुणिजन मानसोल्लासक

श्रीयुत जान्, सी, नेसफील्ड साहब एम, ए,

अवध देशीय पाठशालाध्यक्ष वीरेश की आज्ञा से

पुस्तकालयों के साहित्य के हेतु

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर यन्त्रालय में

पण्डित रामरत्नवाजपेयि के प्रबन्ध से छपा ॥

जनवरी सन् १८७६ ई०

प्रथम भाग कवित्वरत्नाकर का सूचीपत्र ॥

नम्बर	कवि का नाम	काव्यका विषय	पृष्ठ	पंक्ति

—:o◯o:—

श्री सच्चिदानन्दमूर्त्तयेनमः ॥

कवित्वरत्नाकर

प्रथम भाग ॥

———००———

श्री सर्व गुणाकर कृपा सागर परमात्मा
की बन्दना ॥

सवैया——शुकदेव ।

आलसनीदमें मातासदा अरुउद्यमहीन दुबेरखवैया ।
ग्रासलगैनहिंपानिभरौजो पासधरो उठिकैन पियैया ॥
ऐसे निकम्मन के शुकदेव कृपा के धाम हो पेट भरैया ।
भोरतेसांझअरुसांझतेभोरलौंमोसोंकुपूतनतोसोदेवैया ॥

कुण्डलिकाछन्द——गिरिधर ॥

नैया मेरी तनकसी बोझी पाथर भार ।
चहुंदिश अति भौंरैं उठत केवट है मतवार ॥
केवट है मतवार नाउ मंझधारहि आनी ।
आंधी चलत उडराड तेहू पर बरसै पानी ॥

कहिगिरिधर कविराय नाथहै। तुमहि खेवैया।
उठहि दया को डांड़ घाट पर आवै नैया॥
उरझी नाव कुठौरमें परी भंवर विच आय।
दीनबन्धु अब तोहि विन को करिसकै सहाय॥
को करिसकै सहाय ह्वै करिया विन नाउर।
आंधी उठी प्रचण्ड देखि अति आयो ताउर॥
कहिगिरिधरकविरायनाथविनकबकोहिसुरझी।
ताते हाहा करौं मोरि विपदा में उरझी॥

दोहा——रहीम॥

सम्पति सम्पति जानिके सबको सब कुछ देइ।
दीन बन्धु विन दीनकी को रहीम सुधि लेइ॥
समय दशा कुल देखि के लोग करत सनमान।
रहिमन दीन अनाथको तुम विन को भगवान॥

बरवाछन्द——जलील॥

जब जिहि परल बिपतिया तुमहिं उबार।
अब कस बार लगायहु हमरी बार॥
अधम उधारन नमवां सुनि कर तोर।
अधम काम की बटिया गहि मन मोर॥

मन बच कायक निशि दिन अधमी काज ।
करत करत मनु भरिगा हो महराज ॥
लोग कुटुंब जन मितवा सबहि घिनाहिं ।
अस कहुं ठैार न देखिय जहं हम जाहिं ॥
सुरति आइ गइ तुम्हरी अस जिय जान ।
स्वामि मोर बड़ समरथ जिय हरषान ॥
सबहि अलंग ते मनु हटि तुम्हरी ओर ।
अरज करहि सुनि लीजहि तनि करि कोर ॥
तनक दया के चितये मोर बचाउ ।
जल ऊपर चींटी को तिनुकइ नाउ ॥
विलग राम कर वासी मीर जलील ।
तुम्हरि शरण गहि गाढ़े ए निधि शील ॥

सवैया——गुरुदत्त ॥

परि पांचहु भूतन के गणमें गुरुदत्त चहूंदिशि डोलतहो ।
अन्तरहीमें निरन्तर हो पर तो नहिं अन्तर खोलतहो ॥
हरषोई सदा परखो न तुम्हें सबकेगुनऔगुन तोलतहो ।
हम बूझतहैंकिहमारेहियेतुम कैानमहाप्रभुबोलतहो ॥

राम प्रसाद कवि को पत्री मुन्शी अयोध्या प्रसाद को ।

चौपाई ॥

सिद्धि श्री सर्बो उपमान ।
योग्य यथारथ परम सुजान ॥
श्रीपत्री विद्या गुण आगर ।
अवध प्रसाद शील के सागर ॥
लिखी राम परसाद सुहाई ।
यथा योग पहुंचै मन भाई ॥
यहां क्षेम है कुशल तिहारी ।
निशिवासर चाहत सुखकारी ॥
दीन दयानिधि परम पिरीते ।
विन दर्शन बहुतै दिन बीते ॥

दोहा ॥

कहा करों विधि नहिं दिये पङ्ख मोहिं यहि वार ।
पलकन तरु मैं सुकृत नित होत्यों तुम्हैं निहार ॥
समाचार अब आपने लिखौं तुम्हैं चितु लाय ।
पढ़ि लीजै कीजै दया दीजै वजह दिवाय ॥

कुण्डलिका ॥

वारीविशमा फतेपुर काकोरी मोहान ।
दरियाबाद मिलाय के खैराबाद निदान ॥
खैराबाद निदान क़दीम वजह मामूली ।
कहै रामपरसाद सालहासाल वसूली ॥
स्वामी अवध प्रसाद दान के अवर बहारी ।
वेगि डहडही करौ मेरे कुलकी फुलवारी ॥

सवैया ॥

घेरिलियो वृद्धापनआनिके पावं चलाये चलै न हमारे ।
आननसों स्वर शुद्धकढ़ै नहिं कानन बातसुनैांनपुकारे ॥
कम्पतहै सब अङ्ग दयानिधि नैन भएदोउ नीरपनारे ।
दै अपनीअरजी पठयोहम गोकुलचन्दको पासतुम्हारे ॥
मोहिंरिसाय सुनायकही अंगनेजे बड़े फरजन्द हमारे ।
देखिबो क्योंकर ह्वैहैं वसूल तुम्हैं रुपया इमसाल करारे ॥
छोड़िकैआसरोऔरनको यश गावतआपकोसांझसकारे ।
दै अपनी अरजी पठयो हमगोकुलचन्दको पास तुम्हारे ॥

सत्शिक्षा——उपदेश ॥

दोहा——श्रीलाल ॥

देबो यशको मूल है याते देबो ठीक।
परदेबे में जानिलो दुख कबहूं नहिं नीक ॥
सञ्चय करिबो है भलो सो आवै बहुकाम।
पाप न सञ्चय कीजिये जो अपयश को धाम ॥
जड़ कबहूं नहिं काटिये काहू की मनधारि।
पापवृक्षण की जर कटी भलो एक निरधारि ॥
भलो होत नहिं मारिबो काहू को जग माहिं।
भलो मारिबो क्रोध को ता सम नर रिपु नाहिं ॥
चोरी करि नहिं रोकिये काहू को मनमीत।
बनै तो मन को रोकिये याते होइ विनीत ॥
सङ्ग सदा सुखदान है करिये सज्जन देख।
कबहु न करिये दुष्टको सङ्ग यही अवरेख ॥
करै हिरस जो काहु की तामें लह नर हान।
पर विद्याकी हिरस कर जासों हो जगमान ॥
प्रीति रीति दुख मूल है मैं कीन्हों निरधार।
प्रीति भली भगवान की याते हो भव पार ॥

भलो न जगमें चाम कोउ चाम दु:खकोमूल ।
पर गुरु पितुके चाम ते मिटै दु:ख को मूल ॥
बुरो मांगिबो जगत ते याते हो अपमान ।
छमा मांगिबो ईश ते भले एक करिज्ञान ॥

विनय——दोहा ॥

प्रातहि उठिके नित्त नित करिये प्रभु को ध्यान ।
याते जगमें होइ सुख अरु उपजे सत ज्ञान ॥
काहू ते कडुवो वचन कहौ न कबहूं जान ।
तुरत मनुज के हृदय में छेदत है जिमि बान ॥
पढ़िबे में कबहूं नहीं नागा करिये चूक ।
कुपढ़ लोग मांगत फिरहिं सहहिं निरादर भूक ॥
कबहुं न चोरी कीजिये यदपि मिलै बहु बित्त ।
नर फंसि ताके फन्द में पावहि लाज अमित्त ॥
मीठी बोली बोलिये करिके सबसों प्रीति ।
करे प्रेम तासों सकल लखि शुक सारिक रीति ॥
यदपि होत पित मात को सब सुत पै समनेह ।
लखि सुपूत ठण्ढक लहै जरै कुसुत लखि देह ॥

जो जन ईर्षा धारि मन जरत देखि पर हित्त ।
कैसे ऐसे पुरुष के शीतलता रह चित्त ॥
जानि सर्व गति ईश की करै न कबहूं पाप ।
सबहि चराचर जगत को देखत है वह आप ॥
सुनि के दुर्ज्जन के बचन हो रहिये चुप चाप ।
करै जो समता तासु की नीच कहावै आप ॥
झूठ कबहुं नहिं बोलिये झूठ पाप कर मूल ।
झूठे की कोउ जगत में करै प्रीति नहिं भूल ॥

प्रश्नोत्तर—दोहा ॥

सुखी जगत में कौन है कहो मोहिं समुझाहि ।
होय लीन भगवान में सुखी वही जगमाहि ॥
दुखी कहत हैं कौन सों ईश सृष्टि के बीच ।
देखि परोदय जो जरै दुखी रहत वह नीच ॥
को जगमें धनवान है जाको मन न डोलाय ।
जो राखै सन्तोष मन वह धनिकनि में राय ॥
कहत दरिद्री कौन सो कहो मोहिं करि नेह ।
धन तृष्णा जाके अधिक जानु दरिद्री तेह ॥

पुण्यवान जन होहिं जे तिनकी कह पहिचान ।
ईश्वर डर जाके हृदय पुण्यवान सो जान ॥
पापी जन जो जगत में सो किमि जानो जाय ।
जो अपने प्रभु सों विमुख पापी वही कहाय ॥
बुद्धिमान नर के अवे लक्षण कहो बखान ।
जो जग निन्दा सों डरै बुद्धिमान सो जान ॥
सज्जन जन जग कौनसे कहु निश्चय करि मोहि ।
राखि दया सब भल चहै सज्जन जानो सोहि ॥
सबहि जगत जन एक से कैसे दुष्ट लखाय ।
पर अकाज में जासु चित सो नर दुष्ट कहाय ॥
बड़ो कवन या जगत में पूछौं मैं यह बात ।
ढके दोष जो सबन के सो जन बड़ो कहात ॥

नीति—दोहा ॥

करो न रिपुता काहु सों सबके रह तुम मीत ।
जाते मन प्रफुलित रहै होइ न रिपु की भीत ॥
रहो जौन से देश में तहां के नृप की नीति ।
देख चलो ता चाल को यह चतुरन की रीति ॥

श्रम सुचाल के कारणे नर लह प्रभु चित बास।
ताते धन कीरति लहै पूरे पद की आस॥
जो नृप विद्या बल बिना कियो चहै पर बन्ध।
सो पूरी आपति चहै जिमि कुघाट चल अन्ध॥
पहिले लखि के दोष गुण फेर अरम्भै काज।
जाते मनको हो न दुख लहै न जग में लाज॥
ऐसे नरसों बच रहो करै न कबहूं घात।
बार बार सौगन्ध खा कहै दीन ह्वै बात॥
सुनिके सबकी बात को प्रथमहि ढूढ़ौ हेत।
फिरि उत्तरु मुख ते कहो यहि विधि राखौचेत॥
पर निन्दा करि जो तुम्हैं देत बड़ाई पूर।
मति भूलौ यापै कहूं तुम्हैं कहैगा कूर॥
जे आपुस में बैर करि मिलैं और के साथ।
वे भोगत हैं बहुत दुख परि बैरी के हाथ॥
पालौं परजा पाय पद जाते यश जग होय।
पावो-सुख परलोक में यह कहि चतुर नरोय॥

———

विचार कर लाभ को चित्त चलाना ॥

चौपाई—नारायण ॥

गोदावरी नदी के तीरा ।
सेमर तरु पछिन को भीरा ॥
जहां तहां ते आवहिं राती ।
बसैं सबहि पछिन की जाती ॥
एक काल अस्ता चल चन्दा ।
गयो भयो कानन आनन्दा ॥
अरुण उये आनन्दित गाता ।
लघु पतनक जाग्यो परभाता ॥
सबते पहिले आपुहि जाग्यौ ।
चहूं दिशा सो देखन लाग्यौ ॥
आवत देख्यो फंसरी हाथा ।
यम सों अवर न दूजो साथा ॥
मन अति शोच करत है कागा ।
मेरा आज हीन है भागा ॥
पहिली डीठि आजु मैं व्याधू ।
देख्यों ताहिन देख्यों साधू ॥

चिन्ताकरी कवन धौं आजू ।
मुख दर्शन ते होइ अकाजू ॥
यह कहि काग उड्यो अकुलाई ।
कहा करै यहु देखहुं जाई ॥

दोहा ॥

पण्डित सुख सों करत हैं दान धर्म को भोग ।
मूरख दिन दिन लहत हैं सहज रोग में सोग ।

चौपाई ॥

विषई जनते बिषय असूझैं ।
दिन दिन उठि नितहूं मन बूझैं ॥
ब्याधि मरन के शोक हैं जौन ।
हम को आज होहि धौं कौन ॥
पीछे काग चल्यो अकुलाई ।
मनहिं बांधि ढाड़स अधिकाई ॥
ब्याध जाइ बन फांसी लाई ।
ता भीतर कनकी बिथराई ॥
ताही समै कबूतर राजा ।
निज कुटुम्ब को गहे समाजा ॥

ऊंचे उड़े जात आकाशा।
देखत कनकी उपजी आशा॥
बनकन देखि कबूतर धाए।
चित्रग्रीव राजा समुझाए॥
कहहु कहां ते चावर आए।
निर्जन किन कूटे किन खाए॥
निपुन निरूप करहु तुम सोई।
जो कीन्हें सब कर भल होई॥
तन्दुल कण लोभे तुम जामें।
मैं तो नीक न देखहुं तामें॥
यह तो युक्ति होहि गी ऐसो।
करी व्याघ्र ब्राह्मण सों जैसी॥

दोहा॥

सुवरण कङ्कण लोभते पथिक फंस्यो धसि पङ्क।
निर्बल बूढ़े बाघ ज्यों गहि खायो निरशङ्क॥

चौपाई॥

यह सुनि बोले सबहि कपोता।
यह दोहा अन मिल सों होता॥

राज कपोत कथा यह कही ।
सुनिये अर्थ सत्य होतही ॥
एक काल हों दक्षिण गयऊं ।
देखत बड़ो तमासो भयऊं ॥
बूढ़ो व्याघ्र एक सर तीरा ।
धर्मिष्ठी लीन्हे कुश नीरा ॥
सुवरण कङ्कण लीन्हे रहै ।
कङ्कण लेन सबन सों कहै ॥
द्विज दरिद्रि कोऊ चलि आयो ।
व्याघ्र आपनो बचन सुनायो ॥
हे पन्थी यहु कङ्कण लेहू ।
यह सुवरण कङ्कण फल देहू ॥
यह सुनि बोल पथिक भो ठाढ़ो ।
कङ्कण देखि लोभमन बाढ़ो ॥
कैसे भाग होइ अनकूला ।
सुवरण सुख समूह को मूला ॥
यद्यपि है कङ्कण को पैबो ।
अनरथहै घातक ढिग जैबो ॥

दोहा ॥

लाभहु होइ कुठौर ते तऊ भली नहिं बात ।
काल कूट संसर्ग ते अमृत बिष ह्वै जात ॥

चौपाई ॥

उद्यम कवन भांति सों करऊं ।
जहां तहां संशय सब मरऊं ॥
जौलौं नर संशय नहिं चढ़ै ।
कवन भांति सों तब लै बढ़ै ॥
संशय चढ़ि जोई फिरि जीवै ।
सो कल्याण अमृत फल पीवै ॥
तातें हौं प्रकाश फल देखा ।
कहा तुमारो कङ्कण पेखा ॥
हाथ पसारि बाघ दरशायो ।
कङ्कण देखि पथिक मन भायो ॥
पथिक कहै तोसों परतीती ।
करत होत प्राणन भय भीती ॥
बोलो बाघ बावरे अरे ।
अबहूं लौं तेरे डर भरे ॥

बूढ़ो भयों गलित नख दन्ता।
दया शील दाता मति वन्ता॥
करै न तू मेरो विश्वाशा।
मैं तो तेरी पुरवहुं आशा॥

दोहा॥

यज्ञ दान तप ध्यान औ सत्यक्षमा ब्रत होइ।
अरु अलोभ गनु चर्म ये आठ भांति सों होइ॥

चौपाई॥

होत दम्भ ते पहिले चारी।
पिछिले नीके देखु बिचारी॥
यहं लग देखु न मोको लोभू।
सुवर्ण कङ्कण देखत क्षोभू॥
मनुजहि बाघु मारि कै खाई।
यह अपबाद मेटि नहिं जाई॥

दोहा॥

धर्म्म कर्म कुटनी कहै कोऊ करहि न कान।
गो बध कोन्हें हूं कहै विप्र बचन पर मान॥

चौपाई ॥

धर्म शास्त्र मैं जानहुं नीके ।
मेरे मुख सब लागत फीके ॥

दोहा ॥

प्राण आपने देखि तन और नहीं मति बाध ।
अपनेही अनुमानते दया करत हैं साध ॥
सुख दुख प्रिय अप्रिय निरखि अनलीवो आदान।
साधन किये प्रमाण ये अपनेही अनुमान ॥

चौपाई ॥

मैं देखहुं तुम दुर्बल अङ्गा ।
ताते किया दान परसङ्गा ॥
यहै बात कुन्ती सुन बूझी ।
कह्यो कृष्ण तबहीं वह बूझी ॥

सोरठा ॥

दीजै दीनहि दान कहा दिये धन धनिनको ।
रोगी औषधि प्राण वृथा मूरि निररोग को ॥

दोहा ॥

दीवे होइ सो दीजिये बिन कीन्हें उपकार ।
दियो जाइगो कवन सों द्विज सेवा को भार ॥
देश काल कुल पाच लखि दीन्हें पावत पार ।
विना दिये धन धनिनको वृथा जगत अवतार ॥

चैापाई ॥

सर नहाइ यह कङ्कण लेऊ ।
द्विज दरिद्र कहं पानी देऊ ॥
मज्जन हेत सरोवर धस्यो ।
तो लैां महा पङ्क में फस्यो ॥
भागि सकै नहिं अवर उपाऊ ।
तहूं न बाघ कहै सति भाऊ ॥
काढ़हुं आइ तोहि द्विज दीना ।
तू तो भयो जलहि को मीना ॥
सङ्ग सङ्ग घातक ढिग आयो ।
मूड़ मारि विप्रहि समुझायो ॥
कहहु पथिक तू का यह कीन्हा ।
घातक की बातन मनु दीन्हा ॥

दोहा ॥

विद्या अरचनहूं किये दुरजन होत न सूध।
प्रकृति स्वभाव मिटै नहीं ज्यों मीठे गोदूध ॥
इन्द्री जाके वश नहीं रहैं नयन अरु कान।
धर्म किया बिन काज तो ज्यों गजके अस्नान ॥
अभरन बारह करत ज्यों अरु सोरह शृङ्गार।
क्रिया बिना ते होत हैं ते इन्द्रिय को भार ॥
गुणमति गुण शोभा वहो परखि हरषि ढिगजाउ।
जोगावर जित सब गुणनि मूढ़हि चढ़त सुभाउ ॥

चौपाई ॥

यह कीन्ही चिन्ता बहुतेरी।
जब लगि मीचु न आई नेरी ॥
नीकी नहीं लोभ की बाता।
पथिक मुयो पाछे पछिताता ॥
याते मैं कङ्कण की कथा।
तुम सों कही भई है यथा ॥

संसार अनित्य है ॥

सवैया——तुलसीदास ॥

बैठि समुद्र की ओट के कोट में कञ्चन के घर जाइ भुलाना। बीस भुजा बलवन्त हुतो तब इन्द्र गयन्दहु से हम ताना॥ लाखु करोरि सुता सुत बन्धव सो गृह रावण जात न जाना। धरा को प्रमाण यही तुलसी जो फरा सो झरा जो बरा सो वुताना॥ बलि विक्रम वेणु दधीच गये औ गये पारथ जिन भारत ठाना। बालि गये बलरूप गये जिनको कखरी दशकंठ दबाना। गये दुर्योधन जङ्ग जुरे जिन चौसठि कोश में छत्र विताना। धरा को प्रमाण यही तुलसी जो फरा सो झरा जो बरा सो वुताना॥

धराको प्रमाण ॥

केते भये यादव सगर सुत केते भये जातहू न जाने ज्यों तरैयां परभात की। बलि वेणु अम्बरीष मानधाता प्रहलाद कहांलौं गनावों कथा रावण ययाति की। एऊ न बचन पाए काल कौतुकी के हाथ भांति भांति सेना रची घने दुख घातकी॥

चारि २ दिना को चाउ चाहैं सो करै मनमें अन्त लूटि जैहै जैसे पूतरी बरात की ॥

दोहा——शिवप्रसाद ॥

इत गुलाम इत इलतमिस इतहि महम्मद शाह ।
इतहि सिकन्दर सारिखे बहुतेरे नर नाह ॥
जे न समाए बाहु बल अटक कटक के बीच ।
तीनि हाथ धरती तरे सोचु किए अवनीच ॥
जे आये नूतन रचे घर गढ़ नगर समाज ।
पूरे काहू ने नहीं किये जगत के काज ॥
जग पर कबहुं न कीजिये भूलि मनहिं विश्वास ।
या ने बहुतन को किया पालन और विनाश ॥
देह छोड़ि जब जात है जीव पवित्र अभेद ।
कह आसन कह भूमि पर मरन माहिं कछु भेद ॥

वंशीधर ॥

संग किसी के मति चलो यह जग माया रूप ।
ताते तुम वाको भजहु जो जगदीश अनूप ॥
चलना है रहना नहीं चलना विश्वा बीस ।
ऐसे सहज सोहाग पर कौन गुधवे शीस ॥

सवैया——श्रीलाल ॥

आतशबाज़ीगईछणमें छुटिचेततनाहिंअजोअंखिफूटे ।
मायाकेबाजनबाजि गयेपरभातहीं मात खवासबबूटे ॥

देव ॥

देव देखैयन दाग़ बने रहे बाग़बने ते बरोठेहो लूटे ।
काम परो दुलही अरु दूलह चाकर यार दुवार ते छूटे ॥

घनाचरी ॥

कासों करैं मोह मोहि मोहीं की परी है देव मोहन से मोही महा माया में बिलाय गये । मीन से मुनीश महा मनु से मनुज मानधाता सम मानी महा मदसों सिराय गये ॥ वामन से रावन से रामजू से खेलि खेलि खलन की खोपरी खिलौना सी खिलाय गये । काटे महा काल व्याल बली बलिभद्र ऐसे बालि ऐसे बलि से बल्ला से विलाय गये ॥

सवैया ॥

हायदई या कालके ख्यालमें फूलसे फूलिसबे कुम्हिलाने ।
याजगबीचबचो नहिंमीचसेजेउपजे तेमहीमेंबिलाने ॥

देव अदेव बली बलहीन चलेगयेमोहकी हौसहिलाने ।
रूप कुरूप गुणी निगुणी जे जहांउपजे तेतहांहोंसमाने ॥

व्यवहारिक उपदेश ॥

कुण्डलिका——गिरिधर ॥

प्राण पुत्र दोऊ बड़े युग चारहु परमान ।
सो नरेश दशरथ तजे वचन न दीन्हे जान ॥
वचन न दीन्हे जान बड़ेन की यही बड़ाई ।
बानि कही सो होइ और सर्ब्बस किन जाई ॥
कहि गिरिधर कविराय भये दशरथ प्रणवाना ।
वचन कहे नहिं तजे तजे सुत अरु निज प्राणा ॥
नारी अतिबल के भये कुलकर होत विनाश ।
कौरव पांडव वंश को किया द्रौपदी नाश ॥
किया द्रौपदी नाश केकई दशरथ मारे ।
रामचन्द्र से पुत्र त्यजु वनवास सिधारे ॥
कहि गिरधर कविराय सदा नर रहइ दुखारी ।
सो घर सत्या नाश जहां है अति बल नारी ॥
यारो शायर दश भले कायर भल न पचास ।

शायर रण सम्मुख लरैं कायर प्राण कि आश ॥
कायर प्राण कि आश भागि रणते वै आवैं ।
आपु हंसावहिं लाेग नृपति काे नाम धरावैं ॥
कहि गिरिधर कविराय बात चारहु युग जाहर ।
शायर भले हैं पांच संग साै भले न कायर ॥
ताेरहु नदी न तीर तरु जाे बरषा सरसाय ।
वारिबाढ़ि दिनचारिकी अपयशजन्म न जाय ॥
अपयश जन्म न जाइ जाइ पाहन मिटि रेखा ।
विभव बड़ाई समय सदा कहुं रहत न देखा ॥
कहि गिरधर कविराय एक नेकी जनि छाेड़हु ।
समय घटत पुनि बढ़त तीरतरु नदी न ताेरहु ॥
बड़े पात काे देखिकै चढ़ाे कमण्डल धाय ।
तरुवर हाेंहित भरुसहहिं रंड़ फाटाे अरराय ॥
रंड़ फाटाे अरराय फूल अन्तहि कहुं फूला ।
बतियां गई सुखाय और मारग में भूला ॥
कहि गिरिधर कविराय सुनहु अनआेही अड्डे ।
वै देशहि जनि जाउ जहां बातन के बड्डे ॥
जाकी धन धरती हरी ताहि न लीजै सङ्ग ।

जो संगै राखे बनै तौ करि डारु अपङ्ग ॥
तौ करि डारु अपङ्ग फेरि फरकै सो न कीजै ।
कपट फन्द बतलाइ तासु को मन हरि लीजै ॥
कहि गिरिधर कविराय खटक जैहै नहिं ताको ।
सो कछु करै उपाय हरौ धन धरती जाको ॥
हीरा अपनी खानिकोमनहीं मन पछिताय ।
गुण कीमति जानी नहीं कहां बिकान्यो आय ॥
कहां बिकान्यो आइ छेदि करिहाँवसो बांध्यो ।
बिन हरदी बिन लोनमांस जस फूहर रांध्यो ॥
कहि गिरिधर कविराय धरौं कैसे मन धीरा ।
गुण कीमति घटिगई यही कहि रोयो हीरा ॥
हंसा यहं रहिये नहीं सरवर गये सुखाय ।
जो रहिये तौ शीस पर बगुला देहैं पाय ॥
बगुला देहैं पांय कीच कारे ह्वै जैहो ।
लोक हंसाई होइ कहा कछु इज़्ज़ति पैहो ॥
कहिगिरिधर कविराय मोहिं यक एही शंसा ।
याहू ते कछु घाटि औरहू होइ हंसा ॥
नयना जबपरवश परैं उत्तम गुण सब जांय ।

वे फिरि २ चोरी करैं ए फिरि फिरि लपिटांय ॥
ए फिरि २ लपिटांय नेत्र बहुरैं भरि आवैं।
खान पान सुख त्याग रात दिनहीं दुख पावैं ॥
कहि गिरिधर कविराय सुनहु तुम श्रवणनि नयना।
लोग जुदे इकलंक परैं जब परवश नैना ॥
धोखे दाड़िम के सुवा गयो नारियर खान।
खन खाई पाई सज़ा तब लाग्यो पछितान ॥
तब लाग्यो पछितान बुद्धि अपनी को रोवै।
निर्गुणियन के साथ बैठि अपनो गुन खोवै ॥
कहि गिरिधर कविराय घरै जेये नहिं राखे।
चोंच खटकै टूटि सुवा दाड़िम के धोखे ॥
साईं पुर पाला पर्‌यो आसमान ते आय।
पंगु अन्ध को छोड़िके पुरजन चले पराय ॥
पुरजन चले पराय अन्ध एक मतो विचारो।
धरि पंगा को पीठि डोठि वाकी पगु धारो ॥
कहि गिरिधर कविराय मतेसों चलियो भाई।
बिना मते की राज्य गई रावण की साईं ॥
साईं समय न चूकिये खेलि शत्रु सों सार।

दाँव परे नहिं छोड़िये तुरत डारिये मार ॥
तुरत डारिये मारि नरद काची करि दीजे ।
काची होइतो होइ जीति जगमें यश लीजे ॥
कहि गिरिधर कविराय बड़े बुधिवानन गाई ।
कोटिन करिय उपाय शत्रु को मारिय साई ॥
साई घोड़न के अछत गदहन आयो राज ।
कौवा लैके हाथ में छोड़ि देत हैं बाज ॥
छोड़ि देत हैं बाज राज अब ऐसा आयो ।
सिंहन को करि कैद स्यार गजराज चढ़ायो ॥
कहि गिरिधर कविराय जहां ए बूझ बड़ाई ।
तहां न बसिये रैनि सांझहीं चलिये साई ॥
साई नदी समुद्र को मिली बड़प्पन जानि ।
जातिनाश भइमिलतही मानमहतको हानि ॥
मान महत की हानि कहो अब कैसी कीजे ।
जल खारी ह्वै गयो कहो अब कैसे पीजे ॥
कहि गिरिधरकविराय कच्छ मच्छन सकुचाई ।
बड़ो फज़िहता चार भयो नदियन को साई ॥

———

ऐश्वर्य में दीन मित्र पर प्रेम ॥

दोहा——नरोत्तम ॥

गणनायक को नाम लै गवन सुदामा कीन ।
कृष्ण मिलन की चाह मन चले दिवस द्वै तीन ॥
तीनि दिवस चलि विप्र के दूखि उठे जब पाय ।
एक ठौर सोए कहूं घास पयार बिछाय ॥
अन्तर्यामी आपु हरि देखि मित्र की पीर ।
सोवत लै ठाढ़ो कियो नदी गोमती तीर ॥
प्रात गोमती दरश ते अति प्रसन्न भौ चित्त ।
विप्र तहां अस्नान करि कीन्हो नित्त निमित्त ॥
भाल तिलक घिसि दै लियो गही सुमरणी हाथ ।
दिव्य देखि द्वारावती भये अनाथ सनाथ ॥
द्वारपाल द्विज जानिके कीन्हो दण्ड प्रणाम ।
विप्र कृपा करि भाषिये सकल आपनो नाम ॥
नाम सुदामा कृष्ण हम पढ़े एकही साथ ।
कुलपांडे ब्रजराज सुनि सकल जानि हैं गाथ ॥
द्वारपाल तहं चलि गयो जहां कृष्ण यदुराय ।
हाथ जोरि ठाढ़ो भयो बोलो शीश नवाय ॥

सवैया ॥

लोचनपूरि रहे जलसेप्रभु देखतही दुखदूरिते मेटो ।
शोचबढ़ो सुरनायकके कलपद्रुमके उरमाहिं खखेटो ।
कम्पि कुबेर हिये सरसे परशे जब पाद सुमेरु समेटो ।
रंकतेराजभयो तबही जबहीभरिअंक रमापति भेटो ॥

घनाक्षरी ॥

हूल हियरामे अरु कानन परीहै टेर भेटत सुदामैं श्याम चवन ना अघात हीं। कहै कवि नरोत्तम रिधि सिद्धिन में शोर भयो ठाढ़ी थरहरै अरु शोचै कम लातहीं॥ नागलोक नाक लोक लोक लोक ठाढ़े थर हरै शोचैं सूखे सूखे जात सब गात हीं। हालो परो थोकन में लालो परो लोकन में चालो परो चक्रन में चावर चबात हीं॥

सवैया ॥

मौन भरे पकवान मिठाइन लोग कहैं निधिहै सुखमाके।
सांझसकारेपिताअभिलाषतदाखन चाखत सिंधुरमाके॥

ब्राह्मणएककोऊ दुखियासेर पावक चावरलायोसमाके।
प्रीतिकीरीतिकहाकहियेत्यहिबैठेचबातहैंकन्तारमाके॥
दाहिनेवेदपढैं चतुरानन सामुहेध्यान महेश धरेहैं।
बायेंदुओकर जोरिसुरेश लयेसब देवन साथ खड़े हैं॥
एतहीं बीच अनेक लियेधन पांयन आजु कुबेर परेहैं।
देखिविभौ अपना सपना ब्रह्मनाथ पुरेवहुचौंकि परेहैं॥

दोहा॥

दीवो हतो सो दै चुके विप्रन जानी गाय।
मनमें गुणी गोपालजू जोकछु दीन्हों हाथ॥
वहपुलकनि वह उठि मिलनि वह आदरकीबानि।
यह पठवनि यदुराय की अब न परी मोहि जानि॥
घर घर कर ओड़त फिरो नेक मही के काज।
कहा भयो जो अब भयो हरिके राज समाज॥
बालापन के मित्र हे कहां देउ अब शापु।
जैसो हरि हमको दयो तैसे पैयो आपु॥
नव गुण धारी छगुणसों त्रिगुणा मध्ये जाय।
लाये चपला चौगुणी आठो गुणन गमाय॥

घनाक्षरी ॥

सुन्दर महल मणि माणिक जटित अति सुवरण सूरज प्रकाश मानो दै रह्यो । देखत सुदामा जू को नगर के लोग धाय भेटे हरषाइ जोई सोई पगु छुइ रह्यो ॥ ब्राह्मणी को भूषण विविधि विधि देखि कह्यो जेहों हों निकासो सो तमासो जग ह्वै रह्यो । ऐसी दया करी जब हरि के दरश पाइ द्वारिका ते सरिस सुदामा पुर ह्वै रह्यो ॥

दोहा ॥

कनक दण्ड करमें लिये द्वारपाल हैं द्वार ।
जाइ दिखायो सबन लै यहै जु गेह तुम्हार ॥
कह्यो सुदामा हंसति हो ह्वै कपि परम प्रवीन ।
कुटी दिखावहु मोहिं वह जहां ब्राह्मणी दीन ॥
द्वारपाल सों तिन कही कहि पठवहु यहगाथ ।
आके विप्र महा बली देखहु होहु सनाथ ॥
सुनत चली आनंद युत सब सखियन लै संग ।
नूपुर किंकिणि दुंदुभी मानहु तुरंग अनंग ॥

कह्यो ब्राह्मणी आइके यहै कन्त निजु गेह ।
श्री यदुपति तिहुंलोक में कीन्हो प्रगट सनेह ॥

राम चन्द्र श्रोर रावणादिकं का युद्ध ॥

चामर छन्द——केशव ॥

कुम्भ करण रावणहिं प्रदच्छिण करी चल्यो ।
हाय हाय ह्वै रहेउ अकाश आसुहीहल्यो ॥
मध्य जुद्ध घुंटिका किरीट संग शोभनो ।
लच्च पच्च सों कलिंद्रि इन्द्र का चढ्योमनो ॥
उडैं दिशा २ कपीश कोटि २ श्वासही ।
चपै चपेट पेट बाहु जानु जंघ सोतही ॥
लए हैं ऐंचि श्रोर २ वीर बाहु बातहीं ।
भषे ते अन्तरिच्छ २ लच्च २ जातहीं ॥

भुजंगप्रयात——कुम्भकरण ॥

नहों ताडुका हों मुवाहो न सानो ।
नहों शंभुको दगड सांची बषानो ॥
नहों ताल मालीखरो जाहि मारो ।
नहों दूषनो सिंधु सूधो निहारो ॥

सुरी आसुरी सुन्दरी भोग करना ।
महा काल को काल हौं कुम्भकरना ॥
सुनौं राम सङ्ग्राम को तोहि बोलैां ।
बढ्यो गर्व लङ्काहि आए सुखोलैां ॥
उठ्यो केशरी केशरी जोर छायो ।
बलौं बालि को पूत लै नील धायो ॥
हनूमन्त सुग्रीव सोहैं सभागे ।
डशैं डांश से अङ्ग मातङ्ग लागे ॥
दशग्रीव को वन्धु सुग्रीव पायो ।
चल्यो अङ्क मैं लै भले अङ्क लायो ॥

हनूमन्त लत्ता हन्यो देह भूल्यो ।
छुट्यो कर्ण नाशाहि लै इन्द्र फूल्यो ॥
संभारो घरी एक में हूं मरू कय ।
फिरयो रामही सामहें सा गदा लय ॥
हनूमन्त जू पूंछ सां लाइ लीन्हों ।
नजानो कबै सिन्धु में डारि दीन्हों ॥
जहां काल्न के केतु सों लात लीनो ।
कियो राम जू हस्त पादादि हीनो ॥

चल्यो लोटते पांय वक्रै कुचाली ।
उड्यो मुण्डलै बान ज्यों मुण्डमाली ॥
तहां सुरन के दुन्दुभी दीह बाजे ।
करी पुष्प की वृष्टि जै देव गाजे ॥
दशग्रीव शोकग्रस्यो लोक हारी ।
भये लङ्कहीं मध्य आतङ्क भारी ॥

दोहा ॥

तबही गयो निकुम्भिला होम हेत इंद्र जीत ।
कह्यो तबहि रघुनाथ सों मतो विभीषण मीत ॥

चञ्चरीक ॥

जोरि अङ्गुलि को विभोषण राम सों बिनती करी ।
इन्द्र जीत निकुम्भि लागो होम हेतहि शुभ घरी ॥
सिद्धि होम न होइ जबलगि ईश तबलगि मारिये ।
सिद्धि होम प्रसिद्धि है यह सर्वथा हम हारिये ॥

दोहा ॥

सोई वाहि हते किन बानर रिच्छ जो कोइ ।
बारह वर्ष छुधा तृषा निद्रा जीते जोइ ॥

चञ्चरीक ॥

राम चन्द्र विदा किये। तब वेगि लक्ष्मण बीर को ।
संग विभीषण जामवन्तहि और अङ्गद धीर को ॥
नील औ नल केशरी हनुमन्त अन्तक ज्यों चले ।
वेगि जाय निकुम्भिला थल यज्ञ के सिगरे दले ॥
जामवन्तहि मारि द्वै शर तीनि अङ्गद छेदिये ।
चारि मारि विभीषणहिं हनुमन्त पञ्च सुवेधिये ॥
एक २ अनेक वानर जाय लक्ष्मण सों भिरयो ।
अन्ध अन्धक युद्ध ज्यों भवमों जुरयो भवहो हरयो ॥

गीतिका ॥

इन्द्र जीत अजीत लक्ष्मण अस्त्र शस्त्र न संहरै ।
शर एक २ अनेक मारत बुन्द मन्दर ज्यों परै ॥
तब कोपि राघव शत्रु को शिर बाण तत्क्षन उद्धरयो ।
दशकन्ध सन्ध्यहि को करै शिर जाय अञ्जुलि मों परयो ॥
रणमारि लक्ष्मण मेघनादहि स्वच्छ शङ्ख बजाइयो ।
कहि साधु २ समेत इन्द्रहि देवता सब आइयो ॥
कछु मांगिए वर वीर सत्वर भक्ति श्री रघुनाथ की ।
पहिराय माल बिशाल अर्चहि कै गए सब साथ की ॥

कलहंस ॥

हति इन्द्रजीत कहं लक्ष्मण आए ।
हंसि रामचन्द्र बहुधा उर लाए ॥
पुनि मित्र पुत्र शुभ सोदर मेरे ।
कहि कौन २ सुमिरौं गुण तेरे ॥

दोहा ॥

नींद भूख अरु प्यास को जो न साधते वीर ।
सीतहि क्यों हम पावते सुनु लक्ष्मण रणधीर ॥

दोधक ॥

देख्यो शिर अञ्जुलि मों जबहीं ।
हा हा करि भूरि पर्यो तबहीं ॥
आए सुत मन्त्री मित्र सबै ।
मन्दोदरि सी त्रिय आइ तबै ॥
कोलाहल मन्दिर मांझ भयो ।
मानो प्रभु को उड़ि प्राण गयो ॥
रोवै दश कण्ठ बिलाप करै ।
कोऊ न तहूं तहं धीर धरै ॥

दण्डक—रावण वाक्य ॥

आजु आदित्य जल पवन पावक प्रबल चन्द आनन्द मय ताप जगको हरौ। गान किन्नर करहु नृत्य गन्धर्व कुल यक्ष बिधि लक्ष उर दक्ष कन्दर्प धरौ॥ ब्रह्म रुद्रादि सब देव त्रैलोक्य के राजु की आजु अभिषेक इन्द्रहि करौ। आजु सियराम दै लङ्क कुल दूषनै यज्ञ कहं जाय सर्बज्ञ विप्रन वरौ॥

तोमर—मन्दोदरी वाक्य ॥

प्रभु शोचत जो जिय धीर धरौ।
सब शत्रु बधौ स्व विचार करौ॥
कुलमें अब जीवत जो बचि है।
सब शोक समुद्रहि सो तरि है॥

अनुकूल ॥

सोदर जूझो सुत हित कारी।
को गहि है लङ्कहि अधिकारी॥
सीतहि दै के रिपुहि संहारौ।
मोह तजो विक्रम बलभारौ॥

तारक——रावण वाक्य ॥

तुम अब सीतहि देहु न देहूं ।
विन सुत बन्धु धरौं नहिं देहूं ॥
यह तनुतजिलाजहि गहि रहिहौं ।
वन बसि जाय सबै दुख सहिहौं ॥

भुजङ्ग प्रयात——मकराच्छ वाक्य ॥

कहा कुम्भकरनै कहा इन्द्र जीतो ।
करै सोइ वो किङ्करै युद्ध जीतो ॥
सु जौलौं जियौं हौं सदां दास तेरो ।
सिया को सकै लै सुनौ मन्त्र मेरो ॥
महाराज लङ्का सदा राज कीजै ।
करौं युद्ध मोको बिदा बेगि कीजै ॥
हतौं बन्धु सों राम सुग्रीव मारौं ।
अयोध्याहि लै राज धानी सिधारौं ॥

बसन्त ललित ॥

को दगड हाथ रघुनाथ संम्हारि लीजै ।
भागे सबै समर युत्थप दृष्टि दीजै ॥

बेटा बलीष्ट खरको मकराक्ष आयो।
संहार काल जनु काल कराल धायो॥
सुग्रीव अङ्गद बली हनुमन्त्र रोको।
रोको रहो न रघुनाथ जबै बिलोको॥
मार्‍यो बिभीषण गदा उर जोर ठेली।
काली समान भुज लक्ष्मण कण्ठ मेली॥
गाढ़े गहे प्रबल अङ्गन अङ्ग भारे।
काटे कटै न बहु भांतिन काटि हारे॥
ब्रह्मादियो जो वर अस्त्रन शस्त्र लागै।
लैही चलो समर सिंहहि जोर गाजै॥
गाढ़ान्धकार रबि भूतल लीलि लीन्हों।
ग्रस्तास्त राहु युत मानहु चन्द्र कीन्हों॥
हाहादि शब्द सब लोक जहीं पुकारे।
गाढ़े अशेष अङ्ग राक्षस के बिदारे॥
श्री रामचन्द्र पद लागत चित्त हर्षै।
देवांधि देव मिलि सिद्धि न पुष्प वर्षै॥
जूझो जबै समर दुन्दुभि दीह बाजी।
इन्द्रादि देव मिलि किन्नर यक्ष राजी॥

दोहा ॥

जूझतही मकराच्छ के रावन अति दुख पाय।
सत्वर श्री रघुनाथ पहं दियो वसीठि पठाय ॥

चोटक——श्री रामचन्द्र वाक्य ॥

दूतहि देखतही रघुनायक ।
ता कहं बोलि उठे सुख दायक ॥
रावण के कुशली तुम सोदर ।
कारय कौन करै अपने घर ॥

विजै——दूत वाक्य ॥

पूजि उठ्यो जबहीं शिवको तबहीं विधि शुक्र वृहस्पति आये। कै बिनती तिन कश्यप के मिष देव अदेव सबै बकसाये ॥ होमकी रीति नई सिखई कछु मन्त्र दिये श्रुति लागि सिखाये। हौं इतको पठयो उनको उत लै प्रभु मन्दिर मांझ सिधाये ॥

सन्देश ॥

सूपनखाहि बिरूप करी तुम ताते दियो तुमको दुख भारो। बारिधि बन्धन कीन्हे हुतो तुम मो सुत बन्धन कीन्हो तुम्हारो ॥ होइ जो होनी सो होई रहै न

मिटै जिय कोटि विचार विचारो। दै भृगु नन्दन को परसा रघुनन्दन अवध पुरी पगु धारो ॥

दोहा——श्री राम वाक्य ॥

प्रति उत्तर दूतहि दियो यह कहि श्री रघुनाथ।
कहियो रावण होइ जहं मन्दोदरि के साथ ॥

संयुक्त——रावण वाक्य ॥

कहु धौं बिलम्ब कहा भयो।
रघुनाथ पै जब तू गयो ॥
किमि भांति तू अवलोकियो।
कहु तोहि उत्तर का दियो ॥

दण्डक ॥

भूतल के इन्द्रभूमि बैठेहुते रामचन्द्र मानिक कनक मृग छालहि बिछाए जू। कुम्भहरन कुम्भकरन नास हर गोदशीष चरन अकम्प अक्षय अरि उर लाए जू ॥ देवान्तकनारान्तक अन्तक ते मुसक्यात विभीषन वै नतन कान रुखपाए जू। मेघनाद मकराक्ष महोदर प्रानहर वान सो विलोकत परम सुख पाए जू ॥

सवैया—उत्तर ॥

भूमिदई भुवदेवन को भृगु नन्दन भूपनसों वरलैके ।
वामनस्वर्गदयोमघवाहि बलीबलिबांधिपतालपठैके ॥
सन्धिकिबातन कोप्रतिऊतरुआपुनहींकहिए हितुकैके ।
दीन्हीहैलङ्कविभीषण कोहमदेई कहातुमको वहदैकै ॥

मालिनी—मन्दोदरीवाक्य ॥

तब सब कहि हार्यो राम को दूत आयो ।
अब समुझि परी है पुत्र भैया जुझायो ॥
दशमुख सुख जीजे राम सों हौं लरो ज्यौं ।
हरि हरहिय हारे देवि दुर्गा लरी ज्यौं ॥

रावण वाक्य ॥

छल करि पठयो हौं पावतो जो कुठारै ।
रघुपति वपुरा को धावतो सिन्धु पारै ॥
हर सुरपति भर्ता बिष्णु माया विलासी ।
सुनहुं सुमुखि तोकों ल्यावतो लक्ष दासी ॥

चामर ॥

प्रौढ़ रूढ़ केश प्रौढ़ गेह गूढ़ में गयो ।
शुक्रमन्त्रतन्त्र शोधिहोम कोजहींभयो ॥

बालिपूत वायु पूत जामवन्त आइयो ।
लङ्क में निशङ्क अङ्क लङ्कनाथ पाइयो ॥
मत्तदन्ति पङ्क्ति वाजिराजि छांड़िकेदये ।
भांति भांति पक्षिराज भाजि २ कैगये ॥
आसने बिछावने बितानतानतारियो ।
यत्र तत्र चोर छत्र चारु चूरि डारियो ॥

भुजङ्ग प्रयात ॥

भजी देखि के शङ्कि लङ्केश बाला ।
दुरी दौरि मन्दोदरी चित्र शाला ॥
तहां दौरि गो बालि को पूत फूलो ।
सबै चित्र की पुत्रिका देखि भूलो ॥
गहै दौरि जाको तजै ताकि ताको ।
तजै जा दिशा को भजै वाम ताको ॥
भली कै निहारी सबै चित्र सारी ।
गहै सुन्दरी क्यों दरी को बिहारी ॥
तजै दृष्टि कै चित्र को सृष्टि धन्या ।
हंसी एक ताको तहीं देव कन्या ॥

जहाँ हांसहीं देव कन्या दखाई ।
तहां शङ्कि के लङ्क रानी बताई ॥
सुआनी गहे केश लङ्केश रानी ।
तम श्री मनो शूर शोभा निशानी ॥
गहे बांह खैंचै चहूं ओर ताको ।
मनै हंस लीन्हे मृणाली लता को ॥
छुटी कण्ठ माला उरा हार टूटे ।
खसे फूल फूले लसे केश छूटे ॥
फटी कञ्चुकी किङ्किनी चारु छूटी ।
पुरी काम की सी मनै रुद्रलूटी ॥
बिना कञ्चुकी स्वच्छ वक्षोज राजैं ।
किधौं सांचहूं श्री फलै शोभ साजैं ॥
किधौं स्वर्ण के कुम्भ लावण्य पूरे ।
वशी करण के चूर्ण सम्पूर्ण पूरे ॥
मनै इष्ट देवै सदा इष्टही के ।
किधौं गुच्छ द्वै काम सञ्जीवनी के ॥
मनै चित्त चैागान को मूल सोहै ।
हिये हेम की हाल गोलानि मोहै ॥

सुनी लङ्करानी न की दीन वानी।
तहीं छाड़ि दीन्ही महा मौन मानी॥
उठो लै गदा को सदा लङ्क वासी।
गए भाजि कै सर्व शाखा विलासी॥

दोहा——मन्दोदरी वाक्य॥

सीतहि दीन्हों दुख वृथा सांची देखहु आजु।
करै जो जैसी त्यों लहै कहा रङ्क कह राजु॥

विजया——रावण वाक्य॥

कोवपुरा जो मिला है विभीषण है कुल दूषन जोवै
ो कोलैं। कुम्भकरन्न मरो मघवारिपु तोव कहान
डरैं यम सोलैं॥ श्री रघुनाथ के गातहि सुन्दरि
जानैन तैं कुशलात है तोलैं। शाल सबै दिकपाल न
के कर रावण के कर वाल है जोलैं॥

चामर॥

रावणै चले चलेत धाम धाम सों सबै।
साजि २ साज शूर गाजि २ कै तबै॥
दीह दुन्दुभी अपार भांति भांति बाजहीं।
युद्ध भूमि मध्य क्रुद्ध मत्तदन्ति राजहीं॥

चञ्चरी ॥

इन्द्र श्रीरघुनाथ को रथहीन भूतल देखि कै ।
वेगि सारथिसों कह्योरथ जाहु लै सु विशेषिकै ॥
तून अक्षय बान स्वच्छ अभेद लै तनत्राणको ।
आइयो रन भूमि में करि अप्रमेय प्रमान को ॥
कोटि भांति न पैन ते मनते महालघुता लसै ।
बैठि कै ध्वज अग्रश्री हनुमन्तअन्तक ज्यों हंसै ॥
रामचन्द्र प्रदक्षिणा करिदक्ष त्यैजवहीं चढ़े ।
पुष्प वृष्टि बजाइ दुन्दुभि देवता बहुधा बढ़े ॥
राम को रथमध्य देखत कोप रावण केबढ्यो ।
बीस बाहुन की शरावलि व्योम भूतलसोंमढ्यो ॥
शैल न्यैंसिक्ता गए सब दृष्टि के बलसे धरे ।
रिक्ष वानर छेदि तत्क्षण लक्ष लक्ष तनाकरे ॥

सुन्दरी ॥

बानन साथ उड़े सब बानर ।
जाइ परे मलया चल के घर ॥
सूरय मण्डल में एक रोवत ।
एक अकाश नदी मुख धोवत ॥

एक गए यम लोक सहैं दुख ।
एक कहैं युत्र भूतन सों सुख ॥
एकति सागर माहं गए मरि ।
एक गए बड़वा नल में जरि ॥

मोदक ॥

श्री लक्ष्मण कोप करो जबहीं ।
मेले शर पावक के तबहीं ॥
जारो शर पञ्जर छार करो ।
नै ऋत्यन को अति चित्त डरो ॥
दौरे हनुमन्त बली बलसों ।
लै अङ्गद सङ्ग सबै दलसों ॥
मानौ गिरिराज तजे डर को ।
घेरे चहुं ओर पुरन्दर को ॥

दोहा ॥

अङ्गद रण अङ्गद सब अङ्गन मुरझाइ कै ।
रिछ पतिहि अछ रिपुहि लछ गति रिझाइके ॥
वानर गन बानर सम केशव जबही मुरे ।
रावन दुख दावन जग पावन समुहे जुरे ॥

ब्रह्मरूपका ॥

इन्द्रजीत जीत आनि रोंकिये सुबान तानि।
छाड़ि दीन बीर बान कान के प्रमाण आनि॥
शिव प्रताप काटि चाप अङ्ग चर्म बर्म छेदि।
जात भो रसातलै अशेष कण्ठ माल भेदि॥

दण्डक ॥

सूरय मुशल नील पट्टिस परिघ नल जामवन्त असि हनू तोमर प्रहारे हैं। फरसा सुखेन कुन्त केशरी गवाक्ष शूल बिभिषण गदा गज भिण्ड पाल तारे हैं॥ मुगरा दुविद तारु कटरा कुमुद नेज अङ्गद शिला गवाक्ष विटप बिदारे हैं। अङ्कुश सरभ शूल दधिमुख शेष शक्ति बाण तीनि रामचन्द्र रावण उर मारे हैं॥

दोहा ॥

द्वै भुज श्री रघुनाथ सों बिरचै युद्ध बिलास।
बांह अठारह युद्ध पति मारै केशव दास॥

गङ्गोदक ॥

युद्ध जोई जहां युद्ध जैसो करे ताहि ताही दशा रोझि राखैं तहां। आपने शस्त्र लै शस्त्र

काटै भले ताहि केहू कहूं घाव लागै नहीं ॥ दौरि सौमित्र लै बान को दगड ज्यों खगड खगडो ध्वजा घोर छत्रावली । शैल शृङ्गावली छोड़ि मानो उड़ी एकही बार लै हंस हंसावली ॥

त्रिभङ्गी ॥

लछन शुभ लछन युद्ध विचचण रावण सों रिस छांड़ि दई । बहु बानन छगडे रिपुतन खगडे सो फिरि मगडे शोभ नई ॥ यद्यपि रन पगिडत गुण गण मगिडत रिपु दल खगिडत भूलि रह्यो । तजि मन बच कायक सूर सहायक रघुनायक सों बचन कह्यो ॥ ठाढ़ो रण गाजत केहु न भाजत तन मन लाजत सब लायक । सुनु श्री रघुनन्दन मुनि जन बन्दन दुष्ट निकन्दन सुख दायक ॥ अब टरै न टारो मरै न मारो हैं हठि हारो धरि शायक । रावणहि न मारत देव पुकारत हैं अति आरत जग नायक ॥

छप्पै ॥

जेहिशर मधु मद मर्दि महा सुर मर्दन कीन्हों । मारो कर्क सु नर्क शङ्ख हति शङ्ख जु लीन्हों ॥

निःकण्टक सुर कटक करो कैटभ बपु खण्डौं।
खर दूषन त्रिशिरा कबन्ध शिर खण्ड बिखण्डो॥
कुम्भकरन जेहि संघरो पलन प्रतिज्ञा ते टरो।
तेहिबाण प्राण दशमौलिके कण्ठदशौकुण्ठितकरो॥

दोहा॥

रघुपति पठयो आसुहीं असुहर बुद्धि निधान।
दश शिर दशहू दिशन को बलि दै आयो बान॥

मदन मनोहर॥

भुव भारहि संयुतराकस के गण जाइ रसातल सों अनुराग्यो। जगमें जय शब्द समेतहि केशव राज बिभीषण के शिर जाग्यो॥ मैदानव नन्दिनि के सुख सों मिलिकै सियके हिय को दुख भाग्यो। सुर दुन्दुभि शीस गजा शर रामको रावण के उर साथहि लाग्यो॥

बिजया——मन्दोदरी बाक्य॥

जीति लिये दिगपाल सची के उसासहि देव नदी सब सूकी। बासरहू निशि देवन की नर देवन की रहे सम्पति ढूकी॥ तीनिहुं लोकन की तरुणीन

को बारि बंधी रहै दगड दुहूकी। सोवत श्वान श्रृगाल सु रावन सोवत सेज परे नर भूकी॥

तारक——रामचन्द्र वाक्य॥

अब जाहु बिभीषण रावण लैकै।
सकल सबन्धु क्रिया सब कै कै॥
जन सेवक सम्पति कोष सम्हारो।
मय नन्दिनि को सिगरो दुख टारो॥

स्वामी को शुभ चिन्तकता का फल॥

गीतिका——भोलानाथ॥

बैताल बोल्यो कहहुं राजा बात एक सुनि लीजिये।
वर्द्धमान सुदेश सुन्दर सुनत वैन पतीजिये॥
तहं रूपसेन अनूप भूपति राज तहं को करत हैं।
नीति को अवतार जानहुं दीन को दुख हरत हैं॥
ताको डेउढ़ी मांहिं शोर कछु होइ रह्यो।
तुरत बोलि दरवानि नृपति ने यों कह्यो॥
कहो सत्य सब बात द्वार कह भीर है।
देखि कह्यो समुझाइ सुमति वर बीर है॥

महाराज सुनु वेद पढ़न बुध आवहीं।
धनद द्वार पर आइ वित्त बहु पावहीं॥
तिनहीं को यह शोर गयो समुझाइ कै।
सुनि राजा चुपचाप रह्यो शिर नाइ कै॥
दक्षिण दिशि ते शूर वीर वर आइये।
सकल सजे हथियार सु बचन सुनाइये॥
राज द्वार पर आइ तासु ने यों कही।
खबरि करौ जहं राज चाकरी हम चही॥
द्वार पाल तहं जाइ राज समुझाइ कै।
आयो है एक शूर आश तुव पाइ कै॥
कही नृपति ले आउ तुरत सो आइयो।
राजा कहं शिर नाइ सु बैठक पाइयो॥
राजा पूंछो शूर रोज कह लेउगे।
कहउ मोहिं समुझाइ जो उत्तर देउगे॥
कही वीर कर जोरि भूप सुनि लीजिये।
तोले स्वर्ण सहस्र नित्त मोहिं दीजिये॥
राजा पूंछेउ सङ्ग कितो परिवार है।
कह्यो बीरवर बहु कुटुम्बन हमार है॥

सम संग में एक पुत्र पत्नी साथ है।
एक पुत्रिका और सुनो भुव नाथ है॥
यह सुनि के सब सभा हंसी मुख फेरि के।
मांग्यो इन धन बहुत कह्यो कह हेरिके॥
कीन्हो चित्त विचार काम कह आइ है।
बोलि सुमन्त्री बात कही समुझाइ है॥
तोले स्वर्ण सहस्र नित्त प्रभु दीजियो।
दोजो याही रीति न कसतो कीजियो॥
मिलन लग्यो तिहि नित्त सु सोना हाथमें।
अर्द्ध कीन्ह तिहि दान रखो नहिं साथमें॥
आधे में ते अर्द्ध सु योगिन कहं दियो।
नित्त खरच के काज कछुक निज करि लियो॥
याही रीति सुजान करत सो सेव है।
रचा पलंग सुनित्त करै अह मेव है॥
जबहीं निशिको जाइ पलंग नृप सोवते।
जागि परैं जो कहूं बीरवर जोवते॥
रहते सदा सचेत सु स्वामी सेव में।
और नहीं कछु काज करै वह मेव में॥

दोहा ॥

कोई जो विक्रय करै वस्तु सुधन के हेत।
सदा चकरिया आपनो तन विक्रय करि देत॥
याही ते यों चतुर कहैं यह बात है।
सेवा सबते कठिन धर्म अवदात है॥
एक समय की बात निशा थोरी गई।
मर घट में आवाज आवती एक नई॥
भूपति कहा पुकारि वीरबर है कहां।
याने उत्तरु दयो स्वामि मैं हैा यहां॥
कह नृप देखहु जाइ कवन यह रोवई।
जागत करत पुकार नींद मम खोवई॥
गयो वीर वर तहां जहां वह नारि है।
ताके पीछे नृपति गयो सु विचारि है॥
देखो ताने जाइ तहां एक सुन्दरी।
पहिरे भूषन लखे चन्द द्युति मन्दरी॥
तासों पूंछी बीर कहैा क्यों रोवती।
शायक कैसे नैन तिन्हे जल धोवती॥

कही तासु ने बात बीर सुनिलीजिये ।
राजा लक्ष्मी मोहिं आप गनि लीजिये ॥
कही बीर बर बात तु कारन कहु सबै ।
सत्य कहों सब बात सु पूंछति हो अबै ॥
राजा करत अनीति बिपति तहं आइहै ।
मैं नहिं ताके रहों कही समुझाइ है ॥
एक मास के जात नृपति दुखु पाइहै ।
ताही दुखमें पागि निपटि मरि जाइहै ॥
ताही कारन पाइ यहां मैं रोवती ।
ताकी करि सुधि चित्त नैन दुख धोवती ॥
कही बीर वर बात यत्न कछु तासु को ।
राजा सुखमें रहैं सहित रनि वास को ॥
बोली पूरब ओर देबि कर थान है ।
ता कह तू निज पुत्र देइशिर दान है ॥
राज जिये शत वर्ष सुखहि सों गेह में ।
यह सुनि भट गृह गयो लाय मन नेह में ॥
भूपति ताके सङ्ग चल्यो गृह आइयो ।
लखिबे को तिहि धीर बीर संग धाइयो ॥

तिन निज बाम जगाइ कही यह बात है।
तू निज सुत को मोहिं देइकरि घात है॥
याके शिरके दिये भूप बचि जाइगो।
रहै हमारो धर्म अधर्म नशाइगो॥
यह सुनिकै सुत कही धर्म की रीति है।
होइ तुम्हारो काम टरै सब भीति है॥
कही सुभट यह बात बहुरि वर बामसों।
होइ सुखित सो देवि सरै सब कामसों॥
पुनि बोली तिहि बाम सुनहुं प्रिय प्रानहै।
मेरी तो गति तुही सत्य यह बात है॥
कही पुत्र सुनु जनक देह केहि काम की।
करिये निज प्रभु काज सुमति परमान की॥
ऐसे कहते जाइ भवानी गेह को।
करि पूजन बहु भांति कह्यो करि नेह को॥
नृपति जिये शत वर्ष मनावहुं ईश मैं।
ऐसे कहि एक खड्ग दियो सुतशीस मैं॥
देखि भ्रात निज घात भगिनि ताकी मरी।
मरी बाम बरबीर देर ना कछु करी॥

लखो बीरबर मैं न मरो परिवार है।
कहा द्रव्य लै करौं कियो जो विचार है॥
यह कहिकै निज शीस काटि यों ता समै।
राजा कियो बिचार उचित यह नाहिं मैं॥
मरो हमारे काज सकल परिवार है।
ताते नृप मन मरन बिचास्यो सार है॥
त्यौंहीं नृपने खड्ग लियो कर साथ है।
पकस्यो अम्बा आइ नृपति को हाथ है॥
कही पुत्र बर मांगु किये साहस भलै।
मांग्यो नृप बर सकल ये मम संग जी चलै॥
कही भवानी सकल प्राण ये पाइ हैं।
अमृत ल्याइ त्यहि बार दिये सु जियाइ हैं॥
जै जै कहि सब उठे कह्यो नृप चैनहैं।
बहुरि देवि मों राज कहे ये बैन है॥
जानि साहसी शूर वीर रण धीरको।
दीन्हों आधो राज राज बर बीरको॥
सो पूंछत बैताल नृपति तन हेरिकै।
इनमें को सतवान कहो मोहि टेरि कै॥

दोहा

कहे बैन विक्रम सुमति सुनहु बीर बेताल।
राजा को सत अधिकहै मरत रहै ततकाल॥
पुनि पूंछी बेताल ने कैसे भयो नरेश।
वृथा प्राण चारों दिये कहिये बचन सुवेश॥
सेवक को यह धर्म है करै स्वामिको काज।
ताही को यश बढ़तहै रहै जगत में लाज॥
राजा सेवक हेत लखि देन चह्यो निज जीव।
ताहीते सत अधिक भो सुनहु सुमति केसीव॥

यत्नसे कठिन कार्य सहजही सिद्ध होय॥

दोहा——नारायण॥

जो उपाय ते होतहै बल सों क्यों करि जात।
कनक सूत्र सों सांपको कीन्हों काग निपात॥

चौपाई॥

तब करटक दमनक सों कही।
नीकी कथा सुनों हम चही॥

दमनक वाक्य ॥

टेव कुगड तीरथ है एकु ।
बिन्ध्याधरि गिरि दूरिन नेकु ॥
ता ऊपर वायस की जोरी ।
शाखा पर बैठे एक ठोरी ॥
रहहि रूख खोढ़र में कारो ।
सांपु सकल मांपन ते भारो ॥
वह कवई के छौंना खाई ।
पच्छ हीन बलहीनहिं पाई ॥
तब कवई कौआ सों कहे ।
पुनि अण्डन को डारो चहै ॥
स्वामी तुम छोड़हु यह तीरा ।
यहां होतहै नितउठि पीरा ॥
कारो सांपु बसत है जहां ।
बचहिं महारे चिकुला कहां ॥

दोहा ॥

दुष्टा भार्य्या मीत शठ उतरु टहलुआ देइ ।
सांपु साथघर बास करि मीचु हाथ गनिलेइ ॥

चौपाई ॥

पुनि बायस बोलो करि रोषु ।
भामिनि जनि डरु करु परितोषु ॥
बार बार याको अपराधू ।
सहौं सहत ज्यों सूधो साधू ॥
तब बायसिनि बिहंसि कै कही ।
बली शत्रु ते भागे रही ॥
तब बायस बोलो फिरि आपु ।
मेरो कहा करैगो सांपु ॥

दोहा ॥

बुधि जाके बल ताहि के निर्बुद्धी बल कौन ।
शशक हन्यो निज बुद्धिबल सिंह महाबल जौन ॥

चौपाई ॥

कह बायसिनि बात यह कैसो ।
बायस कहत सुनौ है जैसो ॥
मन्दर गिरि पर एकु हरि रहई ।
नाम दुरददन्ती सब कहई ॥

पशु वध नित प्रति करते रहे।
खायो फिरि जो चहै न चहै॥
तबसबपशुमिलिविनतीकीन्हो।
सिंहहि आय यहै मति दीन्हो॥
काहे को डारहु सब मारे।
एकु एकु पशु लेहु सकारे॥
तब सिंहहु मानी यह बाता।
तब ते एकु २ नित खाता॥
वृद्ध शशा को आयो वारू।
अपने मन त्यहि कीन्ह बिचारू॥

दोहा॥

विनती करीं बिनीत ह्वै धरि जीवन की आस।
जोपै जीवन जात है कहा सिंह को त्रास॥

चौपाई॥

तातें मन्द मन्द चलि गयऊ।
जाय सिंह ढिग ठाढ़ो भयऊ॥
भूखो सिंह कहै रिसिआई।
शशक बैठि कत रह्यो लुकाई॥

शशा कहै का मेरो दोषू ।
मोपै कत कीजै प्रभु रोषू ॥
पैड़े चलि आवत हौं अहो ।
दूजे सिंह बली मोहिं गहो ॥
करी शपथ फिरि ऐहौं आजू ।
आवत हौं कीन्हें कछु काजू ॥
छलसों हो इत आवन पायो ।
अब अपनो करु तू मन भायो ॥
रिस करि सिंह शशा सों कही ।
सिंह दूसरो मारो चही ॥
चलिदिखाउ वहहै किहिठोरा ।
मारहुं देखतही वर जोरा ॥
शशक सिंह को लियो लवाई ।
कूप गहिर तब दियो दिखाई ॥
झांक्यो जाइ सिंह जब कूपा ।
तब देख्यौ आपन अनरूपा ॥
जल प्रतिविम्ब आपनो देख्यो ।
दूजो सिंह वाहि करि लेख्यो ॥

कूदि पर्यो जल भीतर जाई ।
रिस करि सिंह मुयो अकुलाई ॥
पुनि घरनी सुनु और कहानी ।
देखो भनी सुजन सज्ञानी ॥

दोहा ॥

जो कछु होइ उपाय सों सो बल ते नहिं होइ ।
हाथी साथी स्यार को रहो पङ्क में सोइ ॥

चौपाई ॥

कह कवई यह कैसी कथा ।
भाषी काग सुनी है यथा ॥
ब्रह्मारण्य बड़ो गज रहै ।
नाम कपूरतिलक सब कहै ॥
जाति कुपूत स्यार एक खोटो ।
गजको देखि अङ्ग अति मोटो ॥
सबै स्यार मिलि करहिं बिचारा ।
यह बिधि हमको देइ अहारा ॥
काहे को कहुं अनते जाई ।
चारि मास भरि बैठे खाई ॥

तिनमें एक बूढ़ हो स्यारू।
करी प्रतिज्ञा देउं अहारू॥
जम्बुक गज समीप लै गयऊ।
करि प्रणाम भूतन शिर नयऊ॥
मधुर बानि हाथी सों कही।
दृष्टि प्रसाद राज कर चही॥
हाथी चितयो बोलु सुनायो।
कौन है क्यहि कारण आयो॥
मैं तो हों जम्बुक की जाती।
बूढ़ो मोहिं कहत हैं ज्ञाती॥
सब बनचर मिलि मोहिं पठायो;
हौं तो ढिग आपुहि के आयो॥
मोसों कह्यो सबन समुदाई।
बिन राजा अब रहो न जाई॥
नीको भांति निरखिवे सही।
तुम या ठौर के राजा चही॥
जो गुण स्वामी के तन चहिये।
ते सब तुमहों में हम लहिये॥

जो गुण स्वामी के तन चहिये।
ते सब तुमहीं में हम लहिये॥
जो कुलीन फिरि बड़ो प्रतापु।
अनाधार सोई है आपु॥
अति परबीन धर्म सों रहै।
यहि विधि को राजा सबु चहै॥

दोहा॥

प्रथमहिं राजा जानिये पुनि धन धर्म बिचारि।
बिनराजा कछु रहत नहिं धनधरती अरुनारि॥
पृथ्वी पति आधार यह मेह दूसरो होय।
मेह विना बरु जीजिये राज बिना नहिं कोय॥
करत धर्म डरटोटके है परबश सब कोय।
सांचुदया नहिं होत है विन राजा सब लोय॥

चौपाई॥

ताते राज चलहु अकुलाई।
जामें लगन बीति नहिं जाई॥
आजु तुम्हार होत अभिषेका।
बहु बिधि बनचर जुरे अनेका॥

यहि विधि कहि जम्बुक सब भलो।
राज लोभ गज मन हल हलो॥
चल्यो कपूरतिलक अकुलाई।
जेहि मग गयो स्यार शठ धाई॥
धावत धस्यो पङ्क में हाथी।
ठाढ़ो हंसत स्यार है साथी॥
हाथी कहै मित्र कह कीजे।
कौनो भांति राज्य अब लीजे॥
विधि वश मेरो भयो अकाजू।
महा पङ्क में बूड़ो आजू॥
स्यार तबै हांस गज सों कह्यो।
कीच बीच सों निकस्यो चह्यो॥
मेरी पूंछ धरहु तुम हाथा।
बचन मानि चलिये उठि साथा॥
जो सतसङ्ग नीच कर देई।
साधु होइ निन्दित फल लेई॥
गजहि अवश लखि जम्बुक धायो।
निज कुटुम्ब कहं हांक सुनायो॥

यत्न हमारि सफल विधि कीन्ही ।
यत्न सारजो विधि रचि दीन्ही ॥
सुनि सब स्यार हर्षि उठि धाये ।
देखि बभ्रो गज अति सुख पाये ॥
भागि सकै नहिं आन उपाई ।
सब स्यारन मिलि लीन्हों खाई ॥

दोहा ॥

याही ते हौं कहत हौं जो उपाय ते होय ।
सो बल ते नहिं होत है है जानत सब कोय ॥

चौपाई ॥

तब कवई बायस सों कही ।
करु उपाय अब जाना चही ॥
बायस कही प्रिया सुनु बात ।
हौं तोसों कहते अब ख्यात ॥
प्रात राज तनया इत आवै ।
मज्जन करहि खेलि पुनि गावै ॥
कनकसूच जब धरै उतारी ।
तब तू चोंच ते ले अवधारी ॥

घरनी सांप के घर दे डारि।
रच्छक ताहि डारिहैं मारि॥
काक बधू कीन्हो वह मन्त्र।
सोई भयो सकल स्वातन्त्र॥
कनक सूच के रच्छक दौरे।
तौ लौं चढ़े रूख पर ओरे॥
कनकसूच खोढ़र महं देख्यो।
ताढिग श्याम उरग अवरेख्यो॥
पहिले सांपु सबन मिलि मार्यौ।
भाला भेदि भूमि महं डार्यौ॥
कनक सूच फिरि पाछे पायो।
भयो बायसी को मन भायो॥
ताते कनकसूच की कथा।
तुम सों कही भई है यथा॥

दोहा॥

साहस द्रव्य कुलीनता सुघर वैन किमि कोय।
धरियतुला एक ओर सबतुलहि नचातुरिसोय॥

द्यूत कर्म में हानि है—सबलसिंह ॥

सुन्दर मास दमोदर आवा ।
काल निशा दिन अति नियरावा ॥
शकुनी कर्णहि पूछ नरेशा ।
पत्र पठाय दीन प्रति देशा ॥

दोहा ॥

काल निशा जागरणहित आवैं सब भुवराय ।
द्यूत खेल खेलैं यहां करैं सभा मम आय ॥

चौपाई ॥

खेलब हम औ धर्म कुमारा ।
देखहु आय सकल शिरदारा ॥
दुर्योधन कर आयसु पाई ।
गजपुर आये सब भुवराई ॥
सुखद सिविरि पाये सब काहू ।
बहु सत्कार करत नर नाहू ॥

कुरु नन्दन तब बिदुर बोलाये।
जाहु धर्म पहं कहि समुझाये॥
धर्मराज गृह बिदुर सिधाये।
तुरंग सवार साथ शत पाये॥
चपल तुरङ्गम बिदुर सवारा।
जात चले पाण्डव दरबारा॥
बिदुर आगमन सुनि सुखपायो।
आगे मिलन धर्म सुत आयो॥
बहुरि सभा लै गयो भुआरा।
सादर सिंहासन बैठारा॥
पुनि २ भूप रजायसु मांगत।
प्रीति बिलोकि बिदुर अनुरागत॥

दोहा

हृदयबिचारतनखलिखतकौरव की मतिपोच।
हाथीहरहट मद गलित नाहिंनशीलसंकोच॥

चौपाई॥

सुनहुं तात मम आगम काजा।
तुमहिं बोलावत हैं कुरु राजा॥

अभि वन्दन कहि कह्यो संदेशा ।
आये मम गृह बिपुल नरेशा ॥
दून हेत हम कीन्ह उछाहू ।
सो तुमहूं आवहु नर नाहू ॥
इहां काल निशि जागहु आई ।
देखहु मम समाज समुदाई ॥
ऊपर नरेश गुप्त सुनु बाता ।
कुरुपति के मन है छलताता ॥
शकुनी कर्ण सहित दुःशासन ।
चाहत तुम कहं देश निकासन ॥
यहै मनोरथ जीतब जूवा ।
कहत कहेउ यह भेद न भूपा ॥
तुमहिं परम प्रिय जानि सुनावा ।
करहु भूप जो बनइ बनावा ॥
कहत भये अस धर्मज राई ।
सुनहुं सचिव भीमादिक भाई ॥
कुरुपति के इरषा भइ भारी ।
हम कहं जीतन हेत हंकारी ॥

दोहा ॥

युद्ध युवाबश होत नहिं भ्राता करहु विचार ।
होततासु जै तातसुनु जिहि सहाय करतार ॥

चौपाई ॥

यहकुरुपति भलि बात बिचारी ।
मानत जीति न जानत हारी ॥
विदुर बिचारि कहो म्वहि पाहीं ।
का समुझत कुरुपति मन मांहीं ॥
बोले बिदुर कहौ भलि बाता ।
हम यह भेद न जानत ताता ॥
कहा भीम मति भ्रमि कुरुराऊ ।
सो किमि जानै भाउ कुभाऊ ॥
चलहु भूप अब करहु तयारी ।
खेलब नृप गृह पांसासारी ॥
उन समाज करि भूप बुलाये ।
कौतुक देखन को सब आये ॥
जो न नरेश चलौ तुम काली ।
कुरुपति होइ मनोरथ खाली ॥

भीम बचन सबके मन भाये ।
प्रात नृपति गज बाजि सजाये ॥
गये वितान पटल लदि आगे ।
पटह धेनु मुख बाजन लागे ॥

सोरठा ॥

निकर दमामें बाज बोले बिरद पयान के ।
गर्जि उठे गजराज है हीसत रथ घर घरे ॥

चौपाई ॥

बिदुर समेत चढ़े नृप हाथी ।
चलत भये भीमादिक साथी ॥
उठे निशान चले नर नायक ।
धाये बिपुल चहूं दिशि पायक ॥
तुरगारूढ़ नगिन कर बालहि ।
गहि कर घेरि चले भूपालहि ॥
कुरुपति सुनो धर्म्म सुत आये ।
आतुर लखन कुमार पठाये ॥

उलङ्का टुरद दुशासन साथा ।
नायो धर्मराज पद माथा ॥
दै अशीस नृप सहित प्रमोदा ।
बैठारे कुरुपति सुत गोदा ॥
मुक्ता माल दीन पहिराई ।
दिये बिबिधि पकवान मिठाई ॥
कीन बिदा कुरुनाथ कुमारा ।
आपु बितान बीच पगु धारा ॥

दोहा ॥

तिहि अवसर आवत भयो धर्मराज रनिवास ।
त्यागि २ पट पालकी भीतर गईं अवास ॥

चौपाई ॥

लषन समेत बिदुर इत आये ।
सकल गाथ कुरुपतिहि सुनाये ॥
कुरु रनिवास सबन सुधि पाई ।
मिलन द्रुपद तनया कहं आई ॥
सुनि आवत दुर्योधन रानी ।
चली मिलन हित सकल सयानी ॥

तजि नर वाहन सब रनिवासा ।
मिलहिं द्रौपदिहि सहित हुलासा ॥
करि सब बिधि सब कर सत्कारा ।
भांति अनेक भई जिवनारा ॥
कुरुपति बन्धुन की बरनारी ।
निज निज गवन कीन्ह कृतकारी ॥
चलन चली दुर्योधन रानी ।
द्रुपद सुता राखा गहि पानी ॥
करन धर्म सुत की पहुनाई ।
भूरि वस्तु कुरुनाथ पठाई ॥
अशन पान करि धर्मज राजा ।
लीन बोलि द्विज साधु समाजा ॥
बैठ युधिष्ठिर भाइन लैकै ।
विप्रन सहित सुआसन दैकै ॥
द्रुपद सुता अरु कुरुपति रानी ।
सोहहिं पाटल कपट सयानी ॥
लगे पुरान सुनन तब भूपा ।
हरिकी कथा रसाल अनूपा ॥

सोरठा ॥

हरिकीकथा रसाल कहन लगे द्विजविदुष वर ।
सुनत धर्म महिपाल जहं तहं दरवानी खड़े ॥

चौपाई ॥

इहां राज दुर्योधन निर्यश ।
सञ्जयते तब कहत भयोअस ॥
अब तुम जाहु धर्म सुत पाहीं ।
भा शकुनी कर मंच सहाहीं ॥
कहहु धर्म्म सुत ते समुझाई ।
प्रात द्यूत खेलहिं इत आई ॥
सुनि सञ्जय उठि तुरत सिधाये ।
धर्म बचन कुरुपतिहि सुनाये ॥

दोहा ॥

सुनहु भूप सञ्जय कह्यो यह सुत धर्मज राय ।
स्वजन सकलकुरुपति सहितप्रातभेटिहौंआय ॥
सबलसिंह सञ्जय बचन सुनिके कौरव नाथ ।
जात भये बिश्राम थल युवतिन वृन्दन साथ ॥

चौपाई ॥

तिहि राती कर भयो बिहाना ।
पाण्डव गये द्रोण अस्थाना ॥
सङ्ग भीम गुर साधु समाजा ॥
नमत द्रोण पद पाण्डव राजा ॥
करत दण्डवत धर्म्मज चीन्हा ।
द्रोण उठाय लाय उर लीन्हा ॥
दै अशीस भेटे सब भाई ।
मिले द्रोण नन्दन पुनि आई ॥
पूछी कुशल प्रश्ण नृप आछे ।
तब गुरु कही कुशल तवपाछे ॥
कहहु कुशलनिज धर्म्मकुमारा ।
बोले बचन भूप श्रुतिसारा ॥
नाथकुशल सबबिधि अनुगामी ।
तुव अशीस बोले सुनि स्वामी ॥
मांगि बिदा गुरु पद शिरुनाये ।
तुरत पितामह के गृह आये ॥

परसि चरण नृप द्वै करजोरा ।
अति हर्ष मन गद्गद किशोरा ॥

दोहा ॥

पुत्र युधिष्ठिर भद्र तव होइ सुआशिष दीन ।
करनीकुरुपतिकीसमुझि सजलनयनकछुकीन ॥

चौपाई ॥

बढ़ेउ युगुल तन प्रेम प्रवाहा ।
आयसु मांगि चले नर नाहा ॥
वृद्ध चक्षु के मन्दिर आये ।
पितु भ्राता पद शीस नवाये ॥
धर्म आगमन सुनि सुख पाये ।
प्रेम प्रीति हग मति बैठाये ॥
परत चरण लखि पांचो भाई ।
बरवश भूप लिये उर लाई ॥
रहे भूपतिहि चिण घरि चारी ।
करत प्रीति मति हग बैठारी ॥
उठि धर्मज नाये पद शीसा ।
बिदा किये नृप देइ अशीसा ॥

चले समाज समेत सुआरा ।
कुरुपति के मन्दिर पगु धारा ॥
आवत देखि धर्म नर नाया ।
उठे भूप नृप यूथप साथा ॥
मिलि अनेक बिधि करि सत्कारा ।
कुशल पूंछि आसन बैठारा ॥

दोहा ॥

भेटि बिबिधि बिधि युगल नृप बहु आदर मलि भाय ।
धर्मराज देख्यो बहुरि रवि नन्दन गृह जाय ॥

चौपाई ॥

रवि सुत सुना धर्म सुत आये ।
विशासेनि कहं तुरत पठाये ॥
आगे मिलन चरण गहि रहेऊ ।
चिरञ्जीव धर्मज तब कहेऊ ॥
सुत समेत हरि सुत पहं आये ।
मिलत परस्पर चख जल छाये ॥
कुशल प्रश्न पूछत मृदुबानी ।
गे अङ्गारमती जहं रानी ॥

धर्मज देखि रानि सुख पायो ।
भीमादिक आदर बैठायो ॥
आशिष दीन विपुल सुख पाये ।
आतुर भूप विदुर गृह आये ॥
मिले कृपहि नृप अति हित तेरे ।
आवत भये बहुरि नृप डेरे ॥
खान पान करि पति जगती के ।
पुनि सोवत सिंहासन नीके ॥
रही तंबूरन की धुनि माची ।
बार मुखी बहु वृन्दन नाची ॥

दोहा ॥

कहा हांसि भीमादि सब लखि अप्सरा ललाम ।
यहि प्रकार आनन्द ते बिगत भई निशि याम ॥

चौपाई ॥

तेहि अवसर सञ्जय तहं आये ।
लै संदेश कुरु नाथ पठाये ॥
खेलन अक्ष नृपति चलु आजू ।
तुमहिं बोलावत कौरव राजू ॥

सञ्जय बचन भूप सुनि लीन्हों ।
गुनेउ चित्त प्रति उत्तरु दीन्हों ॥
विप्र वृन्द तेहि अवसर आये ।
प्रथम भूप उठि शीस नवाये ॥
दीने सबन यथोचित आसन ।
बहुरि आपु बैठे सिंहासन ॥
गायक नृत्यक बदन टराई ।
रहे चुपाइ भूपरुख पाई ॥
वेद ऋचा द्विज वृन्द अलापे ।
सुनि बस प्रेम सभा सद कांपे ॥
गावहिं विदुष सकल गुण पूरे ।
विविधि प्रकार बजाइ तंबूरे ॥
होत प्रभात धर्म के जाये ।
गन्धारी के सब गृह आये ॥
कीन्ह प्रणाम भूप सब भाई ।
दीन अशीष मातु सुख पाई ॥

दोहा ॥

दीन्हें मञ्च अनेक धरि दासी वृन्द विशाल ।
सेवक भाई सखा सन बैठे धर्म नृपाल ॥

चौपाई ॥

कनक प्रयङ्क विराजत रानी ।
पूछो कुशल प्रश्न मृदुवानी ॥
उठि नरनाह रजायसु मांगी ।
विदा मातु पद अति अनुरागी ॥
अति बल कुरु नन्दन के भाई ।
सब के भवन धर्म सुत जाई ॥
भेटत सबहि गये दिन चारी ।
आई काल निशा भयकारी ॥
दीपक श्राद्ध धर्म सुत कीन्हा ।
विपुल द्रव्य महिदेवन दीन्हा ॥
कीन्हेंउ श्राद्ध वृद्धि हग एका ।
धरि दीन्हें मणि दीप अनेका ॥
गजपुर प्रगटि रहो उजियारी ।
भयो विनाश निशा तम भारी ॥

दोहा ॥

जात भये ताही समय सभा भवन कुरु नाथ ।
विकरण दु:शासन करण शैल शाकुनी साथ ॥

चौपाई ॥

दिये किङ्करन डासि गलीचा ।
अद्भुत वसन परे बिच बीचा ॥
बैठि गये कुरु नायक जाई ।
आवन लागे नृप समुदाई ॥
बाहुलीक गङ्गाधर आये ।
भूरिश्रवा वृषसेनि सुहाये ॥
युधामन्यु कम्बूक उलूका ।
मगहा बन्धु चतुर नहिं मूका ॥
सोमदत्त शशिबिन्दु सुवेशा ।
सैंधव पति अरु शल्य नरेशा ॥
आये नृपति सहस्र हजारा ।
रहत सदा कौरव दरबारा ॥
कौरव कीरति निज महि हेतू ।
अचल करै कौरव कुल केतू ॥

आये सभा वकील घनेरे ।
जे हितकार नरेशन केरे ॥
कौरव केतु अष्ट शत भाई ।
आये साथ सुभट समुदाई ॥

सोरठा ॥

तेहि अवसर गे आय वेद पाणि गण गुण निपुन ।
दीन सभा बैठाय यथा उचित आसन सबै ॥

दोहा ॥

द्रोण कृपा भीषम विदुर आवत लखि कुरुनाथ ।
सहित सभा संभ्रम उठे बैठारे गहि हाथ ॥

चौपाई ॥

आये बहु मड्गन पुर वासी ।
सचिव महाजन निकट निवासी ॥
सबहि नरेश कीन सत्कारा ।
आवत देख्यो द्रोण कुमारा ॥
करि आदर अनेक नर नाहू ।
कहा धर्म सुत पहं तुम जाहू ॥

बेतपाथि तब खबरि जनावत ।
सहित सहाय धर्म सुत आवत ॥
तबलग धर्मराज पग धारा ।
जहं तहं सब नृप करत जुहारा ॥
मिले अग्र आतुर दुर्योधन ।
बैटारे करि विविधि प्रबोधन ॥
अति प्रताप कुन्ती के बालक ।
सोहत सभा प्रजा जन पालक ॥
तेहि अवसर कुरुपति सुख पाये ।
पांसासारि दुशासन लाये ॥
धरि दीन्हे अजात अरि आगे ।
कर गहि भीम विलोकन लागे ॥
सो कुरुपति निज हाथ डसाई ।
लिये धर्म सुत हाथ उठाई ॥
फरके अशुभ अङ्ग भुज बांये ।
उर थर हरेउ छींक समुहांये ॥

सोरठा ॥

दियेउ धर्मसुत डारि परेउ न पांसा जो कहा ।
शकुनी लीन संभारि फरकेउ कहिनहिं पउ परा ॥

चैापाई ॥

धर्मराज पांसा महि डारे ।
बोले बचन नयन अरुणारे ॥
खेल हमार और कुरुपति ते ।
शकुनी तैं खेलत केहि मति ते ॥
कहेउ कुमंच लागि श्रुति माहीं ।
युद्ध युवा लायक तैं नाहीं ॥
शकुनी लज्जित निपट सभामा ।
कुरुपति हृदय क्रोध तब जामा ॥
हृदय क्रोध ऊपर छल कीन्हा ।
बिहंसि भूप प्रति उत्तर दीन्हा ॥
शकुनी कह हम नृप बेठारा ।
यामें कछु न अकाज तुमारा ॥
शकुनी जो हारहि हम देहीं ।
अङ्गीकार जीति करि लेहीं ॥

हम हारहिं शकुनी के हारे ।
नहिं अनुचित नृप हारि विचारे ॥
जो निजु हारि नृपति कछु जानहुं ।
निहचौं किङ्कर तुम कोउ आनहुं ॥

सोरठा ॥

हम खेलहिं तेहि साथ होहिं नीच सब भांतिसों ।
कहेउ वचन कुरुनाथ शकुनी तौ शिर मौर मम ॥
धरौ भार निज शीस बैठारौ किन सेवकन ।
हमहिन आछि महीश हम खेलब नृप सदृश महं ॥

दोहा ॥

धर्मराज सन भीम तब कहन लगे कर जोरि ।
छल है जुवा न खेलिये सुनिये बिनती मोरि ॥

चौपाई ॥

चलि नरेश कीजै निज काजू ।
शकुनी ते खेलिये न राजू ॥
अतिहित भीमसेन की बानी ।
चमल बन्धु पारथ मन मानी ॥

वर्जत सकल धर्म महराजहि ।
सोन सुहात बात कुरु राजहि ॥
भीष्मादिक सब विधिहिं मनावहिं ।
जनि पांसा अब धर्म चलावहिं ॥
होनहार को सकहि मिटाई ।
बोले धर्मराज सुनु भाई ॥
जो यह कहि कुरुनायक बाता ।
छल विहीन लागत मोहि ताता ॥
क्षत्री वंश काछ्र हम काछे ।
युद्ध जुवा पग धरहिं न पाछे ॥
एकदिशि काल प्रचारै जबहीं ।
क्षत्रि धर्म धरि मुरै न तबहीं ॥
तिहिमा फिरि आपुसि कर बीचू ।
पीछे पांउ धरै सो नीचू ॥

दोहा ॥

अस कहि धर्म नरेश तब पांसा लीन्ह उठाय ।
दशा सङ्कटा की कठिन रही निपट नियराय ॥

चौपाई ॥

मन्द वर्ष पति गत बल भयऊ ।
रवि कुदृष्टि मूरति थल गयऊ ॥
सबग्रह अशुभ भये थलही थल ।
वर्षपवर्ष त्रयोदश निर्ब्बल ॥
कहहिं विदुष जन सबहि सशिष्टा ।
महाराज दिन तुमहिं अरिष्टा ॥
जब अस बचन सुनहिं कुरु नायक ।
लागहि बचन मनहुं उर शायक ॥
भावीवश नृप मनहिं न आवा ।
भाषि दांव नृप अक्ष चलावा ॥
पुनि शकुनी कर लीन्ह उठाई ।
करण कहा कुरुपति सुख पाई ॥
धर्मज वृथा न बड़ो श्रम कीजे ।
पांसा में कुछ होड़ वदीजे ॥
काढ़ि कंठते गज मणि माला ।
सो धरि दीन धर्म्म महिपाला ॥

हरित माल मणि कुरुपति राखी ।
पांसा चलन लगे बल भाखी ॥
कपट अक्ष शकुनी सम्भारे ।
कहत परत सो बिनहिं बिचारे ॥
होत जीति कुरुनायक केरी ।
हारे धर्मज वस्तु घनेरी ॥

दोहा ॥

ताही समय बोलाय पुनि निज कुरुनाथ दिवान ।
आयो आयसु मानि सो परम प्रपञ्च निधान ॥

चौपाई ॥

हारि जीति जो होइ हमारी ।
सो तुम लिखत जाउ सम्भारी ॥
आयसु दीन्हों कुरुपति जोई ।
लागो करन शूद्र पति सोई ॥
रहै जो धर्मज के संघ भीरा ।
जीति लिये मुक्ता मणि चीरा ॥
मोती रतन जवाहिर जेते ।
मूंगा कञ्चन कोश समेते ॥

शकुनी कपट अक्ष बल जीते ।
भ्रम वश धर्मज भे सुख रीते ॥
जेती वस्तु धर्म गृह राखो ।
बोलहि विपुल भूमिपति साखो ॥
शकुनी पुनि पुनि अक्ष चलाये ।
जीति देखि कुरु गण सुख पाये ॥
परत न धर्मराज के पांसे ।
थकित देखि सब लोग तमासे ॥
आदि बरादि लोह अरु चांदी ।
रहेउ न शेष ताम्र कांसादी ॥
द्रव्य जो होत धातु घट दोऊ ।
रहेउ न धर्मराज गृह सोऊ ॥

दोहा ॥

शकुनी अक्ष संभारिके पुनि लीन्हें निजु हाथ ।
कपट भेद मह दक्ष अति पक्ष धरे कुरुनाथ ॥

चौपाई ॥

अष्ट धातु आयुध भयकारे ।
क्षण महं सकल धर्म सुत हारे ॥

तर्कश धनुष कवच दस्ताना ।
चर्म त्रिशूल कराल कृपाना ॥
शक्ति कराल अश्व सब चीन्हें ।
प्रथक प्रथक धर्मज धरि दीन्हें ॥
ताते अक्ष शकुनि कर धारी ।
यहि विधि गये धर्म सुत हारी ॥
बाढ़ा रोष धर्म सुत अङ्गा ।
धरो सकल दल नृप चतुरङ्गा ॥
पुनि शकुनी छल अक्ष चलाये ।
कोरे कागज जीति लिखाये ॥
धरे भूप महिषी गण गाईं ।
जीते शकुनी अक्ष चलाईं ॥
व्याघ्र कुरङ्ग शृगाल शशादी ।
कानन नर बानर चित्रादी ॥
पक्षी अति विचित्र बहु भांती ।
रङ्ग २ के अगणित जाती ॥
कनक पींजरन सोहत पांती ।
लखि शोभा भारती लजाती ॥

दोहा ॥

नृप अस अनुचर सकल सो सेवहिं खग मृगवृन्द ।
पृथक नाम कहि धर्म सुत धरे बिगत आनन्द ॥

चौपाई ॥

शकुनी करते पांसा डारे ।
धर्म हारि सब लोग पुकारे ॥
वाहन रथ शिविका महिपाला ।
उष्ट्र महिषा सकल विशाला ॥
एक २ भिन्न २ धरि दीन्हा ।
शकुनी जीति कपट बल लीन्हा ॥
धरेउ नरेश तुरङ्गम सामा ।
कहेउ प्रथक शाला पति नामा ॥
यहि प्रकार धर्मज धरि बाजी ।
हारे सकल तुरङ्गम ताजी ॥
लखि आपन सब भांति बनाऊ ।
रोम रोम हर्षे कुरुराऊ ॥
धर्म्मज नयन वाम कर फरके ।
भय वश अङ्ग धका धक धरके ॥

रह्यो न चेत भई मति भङ्गा ।
धरो धर्म सुत यूथ मतङ्गा ॥
देश देश के मत्त समाजा ।
धरेउ दांउ प्रति धर्मज राजा ॥

दोहा ॥

पांसा शकुनी पाणि गहि देत भूमि जबडारि ।
करत कुलाहल लोग सब निज २ दांव पुकारि ॥

चौपाई ॥

हारे धर्म राज गज सर्व्वा ।
शकुनी अक्ष मेल सह गर्व्वा ॥
रहत सदा जो भूपति सङ्गा ।
शेष रहे ते सकल मतङ्गा ॥
पृथक्क पृथक्क कहि यूथप नामा ।
धरे नरेश जिन्हें विधि वामा ॥
छूट अक्ष शकुनी कर तेरे ।
भई सिहारि धर्मसुत केरे ॥
चकित लोग सब देखि तमासा ।
कस नहिं परा धर्म सुत पांसा ॥

पुनि पुनि परत दांउ कुरुपति को ।
को जानत परमेश्वर गतिको ॥
शङ्कर सरुष धर्म सुत पाहीं ।
बाहु लीक आदिक पछिताहीं ॥
शकुनी पाण्डव सुतहि प्रचारा ।
लीन जीति भाजन भण्डारा ॥
कञ्चन आदि तड़ित मणि भाजन ।
हारे सकल धर्म महराजन ॥

सोरठा ॥

बसन कोश गे हारि रङ्ग २ के अति सुभग ।
दीन्हें पांसा डारि शकुनी शोचे कपट के ॥

दोहा ॥

देश देश के पाण्डवन देत दण्ड अवनीश ।
सकल पाच धरि दांउपर दीन्हें धर्म महीश ॥

चौपाई ॥

शकुनी पांसा तमकि चलाये ।
कुरुपति जयति निशान बजाये ॥

बोलि लिये तब बान्धव चारी ।
दुरद दमत्त दुमुख उच्चारी ॥
कहेउ कि हम जीते नृप भारी ।
देखहु सघन वस्तु सब न्यारी ॥
एक विहीन धर्म महि पालहि ।
जो न डरत सपने रण कालहि ॥
ते हम सहज जीति अब पाये ।
बिन प्रयास विधि ताप बुझाये ॥
पठवहु बोलि वेगि नर नाहू ।
आवैं नतरु सेन सजि जाहू ॥
देहिं दण्ड नत आवहिं बांधी ।
देश देश प्रति करहु उपाधी ॥
दण्ड चतुर्गुण दश गुण लेहू ।
मिलै न तेहि यम शासन देहू ॥
दुर्योधन कर आयसु पाये ।
निज निज कारज सकल सिधाये ॥
अश्वा रूढ़ अनेक बुलाये ।
देश देश लिखि पत्र पठाये ॥

दोहा ॥

मिलहु आय आतुर नृपति त्यागि सकल सन्देह ।
देहु दण्ड दुर्योधनहिं नत जैहो यम गेह ॥

चौपाई ॥

जहं कहुं वीर धीर नृप जाना ।
साजि विकट दल कीन पयाना ॥
जिनते बैर भाव अधिकाई ।
तहं उपाधि करि करहिं लराई ॥
सपनेहुं पाण्डु सुतन बल पाई ।
कीन्ह अवज्ञा जिह भुवराई ॥
करहिं उपाधि तासु संघ नाना ।
जिहि विधि होइ तासु अपमाना ॥
दण्ड चतुर्गुण दश गुण लेहीं ।
लखि बल हीन त्यागि तब देहीं ॥
काहुहि लेहिं बांधि कर सङ्गा ।
काहुहि करहिं समर मह भङ्गा ॥
इहां कुरूपति अति सुख पावा ।
दुर्दर्शनहि बहोरि बुलावा ॥

सजहु तात तुम दल समुदाई ।
लेहु धीर भट यूथ बुलाई ॥
महिखामती नगर को जाई ।
धरि आनहु निशिचर द्वौ भाई ॥

दोहा ॥

दगड बांधि कीजै उचित कीजै अबहि पयान ।
सजि दल दुर्दर्शन चले बाजन लगे निशान ॥

चौपाई ॥

देखि युधिष्ठिर अति दुख पावा ।
दुर्योधन कहं वचन सुनावा ॥
नीति नरेशन ते असि होई ।
जो जस दगड उचित तस सोई ॥
हम अदगड कृत सुत शिशुपाला ।
तुम दल पठयो अति बिकराला ॥
जो होइहि महि दीनि हमारी ।
तुम ते नहिं पाइ है भिखारी ॥
मष महं गयो तासु पितु मारा ।
किये दगड विन युगुल कुमारा ॥

तुम्हहि उचित अब संवत वन्ता ।
लेहु दण्ड जनि वर्ष प्रयन्ता ॥
तासु कानि मैं करत घनेरी ।
तुमहिं कहहुं यक सम्मत केरी ॥
यह प्रति पालहु बात हमारी ।
मन भावहि तस करहु अगारी ॥
तुमहिं नरेश उचित असि बाता ।
बार बार कह शत्रु अजाता ॥

सोरठा ॥

धर्मराज के वैन सुनि बोले कुरु राज तब ।
हमैं उचित यह हैन पाण्डव कर विन चैद्यसुत ॥

चौपाई ॥

अवनी पति अदण्ड करि देहीं ।
हम तजि राज्य कमण्डल लेहीं ॥
तव मुख बनत कहत यह बाता ।
अपर न काहू सुनत सुहाता ॥
धर्मराज सुनि कुरुपति वानी ।
गे जरिगात तेज बल हानी ॥

भीम सेनि फरके भुज दगडा ।
अधर फरहरे रोष उदगडा ॥
पारथ भये विलोचन लाला ।
लखि अनर्थ कह धर्म नृपाला ॥
नाहिन समय रोष कर ताता ।
किमि समुझहिं मूरख यह बाता ॥
परम सुजान चतुर जे वीरा ।
समय विचारि धरहिं मन धीरा ॥
जाहि अभै मैं दीन्ह बसाई ।
अब तापर दारुण भै आई ॥
सकल हारि कर मोहिं न शोचा ।
जो यह परेउ परम सङ्कोचा ॥

सोरठा ॥

निज नयनन लखिमोहिं होत दशासन दुख निपटि ।
ताते यहि विधि तोहि समय जानि धीरज धरहु ॥
सप्त हमारि हजार आयसु विन जनि रिस करहु ।
त्यागहु सकल विकार तात भये अपमान के ॥

चौपाई ॥

बोले तब सहदेव सभागे ।
अब का देखत देखिहौ आगे ॥
अब ते भूप ख्याल तजि दीजे ।
अछत प्राण भवन मग लीजे ॥
नत दुर्योधन नृप अति नीचू ।
मारिहि सकल बोलाइ कुमीचू ॥
नहिं सहदेव वचन मन भाये ।
धर्मराज कर अच उठाये ॥
भीम बहोरि कहा सुनु भ्राता ।
चारि याम रहि यामिनि पाता ॥
याम सयाद दिवस चलि जाई ।
अब अवसर नृप चलिय नहाई ॥
भीम वचन सुनि कह कुरु राजा ।
शकुनी ते भाजे बड़ि लाजा ॥
प्रथम हीन करि चहत न खेला ।
तासु सङ्ग बड़ि हानि पछेला ॥

सुनि कुन्ती सुत अति रिस पायो ।
राखि दांव बहु अक्ष चलायो ॥

सोरठा ॥

परो न धर्मज अक्ष शकुनी लीन उठाइ कर ।
कपट रूप महं दक्ष पुनि पांसा फेंक्यो चहै ॥

दोहा ॥

धर्मराज निज राज्य सब धरि दीन्हों यकदांय ।
जीति लीन्ह शकुनी सबै बिन श्रम कपट उपाय ॥

सोरठा ॥

धरन लगे नरदेव राज्य सकल चित भ्रम विवश ।
कहि दीन्हो सहदेव तीनि वरण ब्राह्मण विना ॥

चौपाई ॥

ब्राह्मण कहो जाहिं किहि हारे ।
सब प्रकार शिरमौलि हमारे ॥
लखि सहदेव केरि चतुराई ।
बिहंसि रहे कुरुनाथ चुपाई ॥
धरो दांव नहिं रहो संभारा ।
हारे भूप सकल परिवारा ॥

राज्य जीति कुरुनायक लीन्हों ।
गह गह जयति दुन्दुभी दीन्हों ॥
सहित समाज धरे सहदेऊ ।
शकुनी जीते छल बल तेऊ ॥
देव कोश समेत धरि दीन्हा ।
नकुलहि जीति कुरूपति लीन्हा ॥
पटल वितान सकल जो रहेऊ ।
सो धरि बहुरि धर्म सुत कहेऊ ॥
पारथ धरे सहित सब सामा ।
हय गज वसन कोश अरु ग्रामा ॥
कुरुपति जीति धनञ्जय पाये ।
परमानन्द निशान बजाये ॥
बहुरि भूप युत सहित भंडारा ।
दीन दांव धरि पवनकुमारा ॥
हारि गये कुरुनायक जीते ।
गयो रङ्क पद भागि महीते ॥
दीने द्विजन याचकन दाना ।
हय गज रथ भूमि गण नाना ॥

गज पुर रहे न रङ्क अभागी ।
केवल धर्म धुरन्धर त्यागी ॥

दोहा ॥

चित भ्रम चकित अजात अरि धरि शरीर नृप दीन ।
धर्म धुरन्धर धीर धर नहिं विचार कछु कीन ॥

चौपाई ॥

दीन्हें शकुनी अक्ष उलारी ।
किङ्कर भये धर्मसुत हारी ॥
छूट राज पद दास कहाये ।
भये अचेत रहे शिर नाये ॥
पुनि २ शकुनी कह नृप पाहीं ।
जो कछु शेष होइ गृह माहीं ॥
उठत खेल अब सो धरि दीजे ।
पीछे पद धरि अयश न लीजे ॥
धर्म सुतहि कुरुनाथ प्रचारा ।
गूढ़ गिरा कहि बारहिं बारा ॥
तुम नृप विदित सत्य ब्रत धारी ।
धरिहि न पद यहि कर्म पछारी ॥

अटपटि कुरुनन्दन की बानी।
समुझि न परी तर्क छल सानी॥
उर बरि उठी रोष दुख ज्वाला।
धरि दीन्हो तनया पञ्चाला॥
बन्धव प्रिय जन अतित समाजा।
करहु मानि मम आयसु काजा॥
कह्यो युधिष्ठिर आयसु होई।
माथे मानि करब हम सोई॥
रूख बदन करि कह कुरुराई।
द्रुपद सुता अब देहु मंगाई॥
सदसि बीच सुनि निर्भय बानी।
रोष ज्वाल उर अति सर सानी॥
धरि धीरज रिस सो उर मारी।
मूर्छि परे नृप अवनि दुखारी॥
रहा न चेत कहा कछु नाहीं।
अटकि रहे मणि खम्भन माहीं॥

दोहा ॥

सबलसिंह धर्मज कथा लखी न काहू आन ।
देखि अवज्ञा कुरुपतिहि हृदय क्रोध सरसान ॥

चौपाई ॥

सूत जात कामी तेहि नामा ।
करत सदा कौरव पति कामा ॥
अति गम्भीर बचन नृप कहेऊ ।
धर्मज महाराज नहिं रहेऊ ॥
भये आजु ते दास हमारे ।
सह परिवार द्रौपदी हारे ॥
सो न युधिष्ठिर देत मंगाई ।
आनहु द्रुपद सुता तुम जाई ॥
लावहु सभा द्रुपद की जाता ।
तुम सब विधि प्रपञ्च के ज्ञाता ॥
कहेउ संदेश गये पति हारी ।
अब तुम सोवहु सेज हमारी ॥
सुनत बचन कामी उठि धावा ।
आतुर धर्म सिविर कहं आवा ॥

दुर्योधन कर सकल संदेशा ।
कहो शील तजि सकल मदेशा ॥
चलहु सभा बोलत कुरुनाया ।
नत धरि लै जैहों गहि हाथा ॥

सोरठा ॥

सुनत सूत मुख बात भय वशकांपी द्रौपदी ।
बिकल भये सब गात कौरव नाथ स्वभावलखि ॥

चौपाई ॥

धरि धीरज कह द्रुपद कुमारी ।
सुनहुं सूतपति बात हमारी ॥
कस अस बचन कहेउ कुरुराई ।
राज सभा त्रिय केहि विधि जाई ॥
कहै सूत यह आयसु मोहीं ।
लै जैहों धरि सभा मं तोहीं ॥
सुनत निठुर सारथि की बानी ।
अति सरोष दुर्योधन रानी ॥
कहा सूत सन बचन रिसाई ।
जानि परी तुम्हरे शिर आई ॥

भूले कहो भूल कयहि केरे ।
गये बिसरि भुज पाण्डव केरे ॥
समुझि परत यह होत बिशेषा ।
चहत नैन तव यम पुर देखा ॥
बोलेहु सूत सुनहुं महरानो ।
मैं आयों नृप आयसु मानो ॥
बचन तुम्हार शीस धरि जैहों ।
दोष न मम कुरुपतिहि सुनैहों ॥

दोहा ॥

सुनत सारथी के बचन तुरत दीन दुरिआय ।
रूख देखि रानी बदन गयो भागि भयपाय ॥

चौपाई ॥

कहि सन्देश सकल तेहि दीन्हा ।
सुनि कुरुनाथ क्रोध अति कीन्हा ॥
दुःशासनहिं बुलाइ नरेशा ।
कहेउ सरोष सूत सन्देशा ॥
पुनि पुनि कहत रोष दारुण अति ।
केश पाश करि लाउ घसीटति ॥

यह सठ पाण्डु सुवन डर पाई ।
सको न मूढ़ द्रोपदी लाई ॥
भीम बाहु लखि कम्पित गाता ।
अजहूं गहबर कहत न बाता ॥
सबते प्रिय निज जीवन जानी ।
सकत मूढ़ नहिं धीरज आनी ॥
चलो दुशासन आयसु मानी ।
आयो जहां द्रोपदी रानी ॥
आवत सरूष दुशासन देखी ।
पञ्चाली भय त्रसित बिशेषी ॥
कहो दुशासन सरूष रिसाई ।
चलु बोलहि दुर्योधन राई ॥

दोहा ॥

दुशासेन के बचन सुनि द्रुपद सुता अकुलानि ।
हमरे तुम सहदेव सम सकत जोरि युग पानि ॥

चौपाई ॥

तात नीति मग देखु बिचारी ।
कहि बिधि जाइ सभा मों नारी ॥

जब लगि हम शिर सेन नहाहीं।
पुरुष मुख देखन को नाहीं॥
मैं रज अवत एक पटधारी।
सभा गये पति जाइ तुम्हारी॥
तात चलन कर अवसर नाहीं।
नत जातिहुं मैं कुरुपति पाहीं॥
भीष्मादिक द्वची सब राजा।
जात सभा मह त्रियको लाजा॥
तात एकान्त बोलि कुरुराई।
मैं सब बिधि कहतिउं समुझाई॥
मम दिशि ते समुझाइ नरेशा।
कहेउ तात तुम भल सन्देशा॥
दूशासन करि नयन तरेरे।
सुनि री हारि गये पति तेरे॥
कसन विचार कीन्ह तब मूढ़ा।
म्वहिं समुझावत बचन अगूढ़ा॥

दोहा ॥

चलत न तैं चिय सदसि कह दूत उत्तर प्रति बात ।
जोरि युगुल कर द्रौपदी कहत भई बिलखात ॥

चौपाई ॥

सुनहु तात तुम नीति निधाना ।
सो मग कौन जो तुमहिं न जाना ॥
तुम कह तात सप्त शत मोरी ।
कहहु सत्य राखहु जनि चोरी ॥
कहहु वेगि तजि जीवन पापू ।
नृप हारे म्वहिं प्रथम कि आपू ॥
हारे होइं प्रथम निज रूपा ।
किङ्कर भये मिटो पद भूपा ॥
दासन के गृह होत न रानी ।
नीति बिचारु समुझि मम बानी ॥
छूटि गये सब नात हमारे ।
नृप हारे हम जाहिं न हारे ॥
जो म्वहिं प्रथम धरो नर नाथा ।
लाज त्यागि चलिहौं तव साथा ॥

होइ किङ्करी करब गृह काजू।
जो कहिहैं कुरु कुल महराजू॥
वेगि समुझि प्रति उत्तरु दीजै।
आयसु होइ अवसि सो कीजै॥

दोहा॥

सुनत दुशासन ये वचन धायो नैन तरेरि।
हारि गयो अज्ञान पति नीति विचारत चेरि॥

सोरठा॥

कहत कटुक दुर्बाद रूख नयन धावत भयो।
देखि जात मर्य्याद भय वस कम्पी द्रोपदी॥

चौपाई॥

जात पुकारत आरत वानी।
देखि दुशासन अति रिस ठानी॥
झपटि केश लीन्हें गहि हाथा।
चलो घसीटत जहं कुरुनाथा॥
देखि दशा दासिन के वृन्दा।
करहिं विलाप विपति परि फन्दा॥

दुर्योधन कर सब रनिवासू ।
विलपत गिरत नैन मग आंसू ॥
परी धर्म सुत सिविर तरापा ।
गज पुर सकल शोक वश कांपा ॥
गहे दुशासन द्रुपदी बारा ।
निकसा नाग नगर गलियारा ॥
देखि दशा विलपहिं पुर बासी ।
जड़ जङ्गम खग मृग नृप दासी ॥
जिहि मग निकसत अन्ध कुमारा ।
देखि वज्र डर जात दरारा ॥
देखत सब जहं तहं बिल खाहीं ।
होत शोर तिहि मारग माहीं ॥

दोहा ॥

देखि झरोखे महल ते दासिन वृन्द हवाल ।
जाइ जाइ रनिवासतिन विदित कीन तत्काल ॥

चौपाई ॥

यह गति सुनि कौरव गण रानी ।
विलपहिं सकल हृदय हति पानी ॥

दुर्गति समुझि द्रौपदी केरी ।
करुणा भवन २ प्रति घेरी ॥
नांघत पौरि खरी पर जाई ।
द्रुपद सुता परवश विलखाई ॥
निकस्यो गन्धारी के द्वारे ।
द्रुपद सुता क्षत विकल पुकारे ॥
मोहिं छुड़ाउ मातु गन्धारी ।
बार २ कह द्रुपद कुमारी ॥
दासिन भीतर खबरि जनाई ।
तजि पर्य्यङ्क जननि उठि धाई ॥
हापुत्रो हाधर्मज प्यारी ।
तुव बलि जाइ मातु गन्धारी ॥
छूटे केश उघरि गयो चीरू ।
विलपत दासी गण सब भीरू ॥
आवत जानि मातु गन्धारी ।
गयो दुशासन बेगि अगारी ॥
जब लगि रानि द्वार पगु दयऊ ।
राज सभा दुःशासन गयऊ ॥

कोउ मुसकात द्रौपदी देखी ।
तर्क करत कोउ मूढ़ विशेषी ॥

सोरठा ॥

करत दया कोउ धीर कोउ धिक्करत दुशासनहिं ।
नयन तजत कोउ नीर कोउ निन्दत भीमादिकन ॥
द्रुपद सुता के केश गहि खैंचत कुरुपति अनुज ।
बैठे सकल नरेश मध्य सभा तहं लैगयो ॥

चौपाई ॥

सिंहासन सोहत कुरुराई ।
जाइ समीप दीन ठढ़ि आई ॥
चहुंदिशि चितै चकित पञ्चाली ।
राज सभा लखि थर हरहाली ॥
लाज विवश नहिं रहो संभारा ।
स्रवत नैन मगते जल धारा ॥
अति सुन्दर लखि नृपति किशोरी ।
कामिन केरि भई मति भोरी ॥
कहैं जासु गृह द्रुपद कि कन्या ।
धन्य धन्य पाण्डव पति धन्या ॥

पुनि पुनि दुःशासनहिं सराहीं।
है बड़ि भाग्य गही जेहि वाहीं॥
आजु धन्य दुर्योधन राई।
आयसु मानि जासु धरि आई॥
लोचन लाभ हमहिं तेहि दीन्हा।
सफल जगत महं जीवन कीन्हा॥
कोउ लखि धर्म दशा दुख पावहिं।
कोउ पछितांहिं शीस महि नावहिं॥

दोहा॥

दुःशासन कह द्रौपदी करहु बात बे काज।
हातन आयसुदासि मह चेरिन के बड़िलाज॥

चौपाई॥

भीषम बिदुर नये महि शीसा।
द्रोण कृपा उर शोच सरीसा॥
सकल धर्म शीलन दुख पावा।
नीचन के उर आनंद छावा॥
शकुनी करण अनन्द समीछे।
दुर्योधन कह नैन तिरीछे॥

दु:शासन सों कहत पुकारी ।
वसन हीन करु द्रुपद कुमारी ॥
लै बैठारि देहु निज जानू ।
बन्धव मोर कहातैं मानू ॥
उठ्यौ दुशासन आयसु मानी ।
बिकरण कहा जोरि युग पानी ॥
तव मुख बचन न सोहत ऐसे ।
कुरु कुल तिलक कहत तुम जैसे ॥
वृद्ध द्रोण गुरु भीषम आगे ।
तुम नृप कहत लाज पति त्यागे ॥
देश देश के भूपति राजत ।
तुम दुर्वचन कहत नहिं लाजत ॥
ज्येष्ठ बन्धु के त्रिय जो होई ।
मातु समान कहत श्रुति सोई ॥

दोहा ॥

चण मह तासु उतारि पति तुमडारी कुरुराज ।
अब अस कहत किजो सुने होत नीचकेलाज ॥

चौपाई ॥

पूरण शशि सम कीरति तोरी ।
जनि महीप करि डारहु थोरी ॥
विनै मानि मम प्रभु अनुरागी ।
देहु द्रुपद तनया अब त्यागी ॥
धर्मराज सन बिन अपराधू ।
नाथ कीन्ह तुम कर्म असाधू ॥
विकरण बचन धर्म मय साने ।
सुनि सरोष रविनन्द रिसाने ॥
सुनु बिकरण तव तन शिशुताई ।
वृद्ध बचन शोभा नहिं पाई ॥
छोटे बदन कहै बड़ि बाता ।
सुनि किमि सकै महीप गुरु ज्ञाता ॥
है यह सभा सकल गुण खानी ।
तुम निज जानि अधिक सज्ञानी ॥
गाल फुलाइ बचन कहि दीन्हें ।
मन माने सब कह लघु कीन्हें ॥

वेष न भूषन के मत योगू ।
जानत तुम नहिं सत सब लोगू ॥

दोहा ॥

खेलहु मिलि सब बालकन जाय सरासन बान ।
मन्त्रदेहु जनिनृपन कहं तुमहो शिशु अज्ञान ॥

चौपाई ॥

बालक हो गृह भोजन करऊ ।
निज मन अहमित नेकुन धरऊ ॥
दुर्योधन आयसु शिर धरऊ ।
सादर सब गृह कारज करऊ ॥
कह विकरण सुनु नृप मत जीको ।
अब नहिं होनहार कछु नीको ॥
जस नृप तस मन्त्री बुधमाना ।
अस कहि निज गृह कीन्ह पयाना ॥
बहुरि सरोष कहा कुरु राजू ।
द्रुपद सुता मम देखु समाजू ॥
नैन हीन सब सूझत नाहीं ।
बोले ताहि सभा मह ताहीं ॥

है यह सभा अन्ध नृप केरी।
केहि प्रकार सूझैरी चेरी॥
हैं हम सुवन अन्ध नृपती के।
भीम सहित तुम जानहुं नीके॥
अन्ध तुमहिं किमि देखहि कोऊ।
देखहु सभा भीम तुम दोऊ॥

दोहा॥

देखो तब अन्धी सभा तुम कह लीन बुलाय।
कीन्हो मम अपमान जिमि तुम अपने गृहपाय॥

चौपाई॥

अब द्रौपदी बसन निज त्यागू।
बैठि जङ्घ मम करु अनुरागू॥
अन्धी सभा न देखै कोई।
जानब गति हमहीं तुम दोई॥
आये चतुर पञ्च पति तोरे।
जे बिनु नैन सभा मिलि मोरे॥
सूझत तुम समेत बहु भीमहिं।
करिहि न क्रोध वृकोदर जीमहिं॥

बहुरि बिलोकि दुशासन ओरा ।
मानत तैं नहिं आयसु मोरा ॥
बेगि द्रुपद तनया नंगिआई ।
लै मम अङ्क देउ बैठाई ॥
भूप बचन सुनि भीम कराला ।
निकसत रोम रोम प्रति ज्वाला ॥
लपट नयन मग प्रगट बिलोकी ।
लीन गदा रिस रहत न रोकी ॥
बन्धू सकल भीम रुख पाई ।
भये सरोष सुभट समुदाई ॥
पारथ पाणि गही असि मूठी ।
कह नृप होत सत्य मम झूठी ॥

सोरठा ॥

धर्मजवदननिहारि बिकलसकलरिसमारिउर ।
दीनगदामहिडारि भीमबिकटपारथअसिहि ॥

चौपाई ॥

रहे पाण्डु सुत सब शिर नाई ।
बारिज नैन बारि सर साई ॥

चला दुशासन सरुष रिसाता ।
नृप सन कही बिदुर मृदु बाता ॥
वचन हमार भूप सुनि लीजै ।
पाछे अम्बर हरन करीजै ॥
सत्य असत्य केर अस बीचू ।
होइ कृषी ज्यौं सींच असींचू ॥
बीच अनीति नीति कर भारी ।
जिमि निशि अंधियारी उजियारी ॥
कही बिदुर यह नीकि न रचना ।
जनि बोलौ अधर्म के बचना ॥
नाश फांस कर नाहिं अंदेशा ।
जो तुम करत अधर्म नरेशा ॥
का तुम मन मह ठीक विचारा ।
कोउ कछु नहिं करि सकहि हमारा ॥
सुनहुं नृपति कहैं वेद पुकारे ।
हैं सदैव प्रभु सङ्ग हमारे ॥
निशु दिन अंधियारे उजियारे ।
कर्माकर्म विलोकन हारे ॥

दोहा ॥

तौ प्रभु कहं लखि सभा मह सत असत्य गुनि लेउ ।
हिरणाकुश लङ्केश की गति गुनि आयसु देउ ॥

चौपाई ॥

सुनि अस वचन बिदुर तन ताकी ।
भृकुटि कीन्ह तब कुरुपति बांकी ॥

दोहा ॥

भृकुटि भङ्ग कुरुनाथ लखि रहे बिदुर चुप साधि ।
थर २ कांपी द्रौपदी निकट बिलोकि उपाधि ॥

सोरठा ॥

परी बिपति वारीश लखि दरकत उर बज्र को ।
धीरज धरहि महीश निज मन समुझावत बहुरि ॥

चौपाई ॥

कपटद्यूत शकुनी ते हारे ।
बिधि यह गति लिखि दीन लिलारे ॥
अहह दैव दिवसन को फेरू ।
गिरि ते रज रज होत सुमेरू ॥

द्रुपद सुता निज मनहिं विचारा ।
का करिहैं कुरुनाथ हमारा ॥
सभा मध्य पति पांच हमारे ।
वीर काल संग टरहिं न टारे ॥
मोहिं उघारि होन कब देहैं ।
उठि कै भीम अवशि सुधि लेहैं ॥
बहुरि सभा यहि भूप अनेका ।
समरथ शूर एक ते एका ॥
जानहिं मार्ग धर्म पथ केरे ।
बचो भीषम आदि बड़ेरे ॥
यदपि न भूपहि कौन निहोरी ।
तो परन्तु लेहैं सुधि मोरी ॥
गङ्गासुत चुपाइ किमि रहि हैं ।
अन्त समै राजा सन कहि हैं ॥

दोहा ॥

अनुचित होन न पाइ है लेहैं मोहिं छुड़ाय ।
आजु पितामह ते सरिस धीर वीर को आय ॥

चौपाई ॥

पुनि गुरु द्रोण सभा मह सोऊ ।
जिन ते अस्त्र सिखा सब कोऊ ॥
भारद्वाज तनय रणशूरा ।
लेहैं मोहि छुड़ाय जरूरा ॥
इत उत बहु भरोस ठहरावति ।
पुनि पुनि गुनि निज मन समुझावति ॥
बहुरि कहत कुरु नाथ रिसाई ।
खैंचहु चीर दुशासन भाई ॥
बसन लेहु सब आतुर छोरी ।
गहि बैठारु जङ्घ पर मोरी ॥
होइ मोरि रुचि पूरण भ्राता ।
आलिङ्गन कै द्रुपद कि जाता ॥
ह्वै अति बिकल द्रौपदी कांपी ।
लेत राहु चन्द्रहि जिमि झांपी ॥
इत उत दशोदिशन दृग हेरी ।
केहरि मनहुं मृगी बन घेरी ॥

भीषम द्रोण करण दिशि चितई ।
निज पति देखि आस सब बितई ॥

दोहा ॥

सकल सभा दिशि देखि कै चितई पाण्डव ओर ।
भीमहि देखि सरोष अति बरजेउ धर्म किशोर ॥

चौपाई ॥

बहुरि कहा कुरुनाथ प्रचारी ।
उठ्यौ दुशासन रिसन संभारी ॥
आतुर कहत बचन कटु धावा ।
मनहुं कृतान्त राहु चलि आवा ॥
एक पाणि लीन्हे गहि केशा ।
यक कर गह्यौ बसन यम बेशा ॥
सकल सभा जननी गति हेरी ।
ग्राम ग्राम गज नगर बसेरी ॥
बहु अवनी पति जे जन साधू ।
बूड़त बारिध शोक अगाधू ॥
वीरन के मुख जोवत अहहीं ।
चहत पितामह अब कछु कहहीं ॥

निश्चय द्रोण चुपाइ न रहि हैं ।
अवशि बचन गङ्गा सुत कहि हैं ॥
कृपाचार्य्य पति गति लखि वामा ।
किमि रहिहैं चुप अश्वत्थामा ॥
यहि विधि कृत निज हृदय भरोसा ।
शील धीरजे नरगत देशा ॥

सोरठा ॥

जे शठ कायर क्रूर मान भङ्ग सब विधि चहत ।
सकल सभा परि पूर करत मनोरथ पृथक पुनि ॥

चौपाई ॥

पकरिसि बसन दुशासन धाई ।
सरुष प्रचारत पुनि कुरुराई ॥
धीर धुरीन रहे चुप साधी ।
श्रीगत भये सकल अपराधी ॥
लखि दुर्दशा द्रुपद तनया की ।
शोक ज्वाल पाण्डव उर बाकी ॥
बारिज नैन बही जल धारा ।
नाइ रहे शिर पाण्डु कुमारा ॥

निपट विकल सब पाण्डु किशोरा ।
नहिं बिहरै उर कठिन कठोरा ॥
तदपि दुष्ट अस तायल माहीं ।
जे हर्षत मन धर्कत नाहीं ॥
कुरुनायक को प्रबल प्रतापा ।
तपत मनहुं रवि द्वादश तापा ॥
अति करुणा सब के उर होई ।
प्रति उत्तरु कहि सकत न कोई ॥
भीष्म द्रोण कुरु बिभव विलोकी ।
रहे चुपाइ सके नहिं रोकी ॥

दोहा ॥

ताक्षण भृकुटि सरोष अतिलखि कुरुनाथ भुवार ।
सकल सभा भय बश कंपत कांपत बारहि बार ॥

चौपाई ॥

कृपाचार्य्य उर शोक अपारा ।
कहि न सकत कछु द्रोण कुमारा ॥
निज शिर नाइ रहे सकुचाई ।
अश्रु पात कृत अति दुख पाई ॥

जे नृप बीर धीर ब्रत धारी ।
देखि अकारज महा दुखारी ॥
सकत न कहि कछु काहुहि काऊ ।
कुरुनायक कर समुझि स्वभाऊ ॥
बार बार कह कौरव राजू ।
बेगि दुशासन करु अब काजू ॥
खैंचन लगो बसन गहि पानी ।
द्रुपद सुता तब अति अकुलानी ॥
तनया बिकल द्रुपदनृप केरी ।
टूटी आस सकल दिशि हेरी ॥
काल रूप लखि कौरव नाथा ।
जाय रहो मन जहं यदुनाथा ॥
राधारमन बचन सुनु मेरे ।
कौन बिलाप कलाप करेरे ॥
बूड़त बिरह सिन्धु यदुनाथा ।
जिमि गहि लीन भरत कर हाथा ॥
जिमि कपीश सुग्रीव उबारा ।
राखि विभीषण रावण मारा ॥

ध्रुवहि निरादर कृत पितु माता ।
तिन कहं नाथ भये तुम त्राता ॥
तुम बिन नाथ सुनै को मेरी ।
करि बिलाप दै हांक करेरी ॥

सोरठा ॥

कोउ न रक्षक मोर कृपा सिन्धु सीता रमण ।
अब भरोस प्रभु तोर मन भावै तैसो करहु ॥

चौपाई ॥

दैत्य दलन प्रह्लाद उबारन ।
लागहु मम गोहारि जगतारन ॥
मम अनाथ के नाथ गोसांई ।
सो न होइ मम लज्जा जाई ॥
तुम विन आरत पक्ष गहो को ।
राखु रमापति लाज रहो को ॥
पाण्डु सुतन तजि सुद्धि हमारी ।
तुम जनि छांड़हु गिरिवर धारी ॥
बैठे सभा सबै अवधारी ।
कोउ न चहत छुड़ावन नारी ॥

बरबश लाज जात अब मोरी।
त्रिभुवन नाथ शरण अब तोरी॥
बीते काल दयानिधि ऐहो।
मोहिं उघारि देखि पछितैहो॥
ग्राह गहे गज कीन पुकारा।
तब तुम नाथ न लायउ बारा॥

दोहा॥

गोकुल बोरत घेरि घन तहं रक्षा तुम कीन।
नाश्यो मातुल सूत मद गिरिवर कर धरि लीन॥

चौपाई॥

सो तुम नाथ कहां गिरिधारी।
यह पापी खैंचत मम सारी॥
खैंचि बसन मम करिहि उघारी।
का करिहो तब आइ खरारी॥
गये लाज प्रभु विरद न रहि है।
कहहु दयाल तुमहिं को कहिहै॥
सर्बसु हरेउ बच्यो यक बसना।
सोऊ हरत बचावत कसना॥

दवा जरत जिमि गोपन राखा ।
कौरव अग्नि दीन्ह गढ़ लाखा ॥
तब तुमहीं यदुनाथ उबारा ।
दीन दयाल कहां यहि बारा ॥
दारिद दरि द्विज के दुख काटे ।
धनपति सरिस सदन धन पाटे ॥
जिमि गुरुसुत आने यदुराई ।
तिमि राखहु मम लाज न जाई ॥

दोहा ॥

श्री पति दीनदयाल अब राखिलेहु पति मोरि ।
फिरि हरि कैसो करहुगे जब पट लेइहि छोरि ॥

चौपाई ॥

बीच सभा प्रभु मोहिं नंगिआवत ।
करुणासिन्धु दौरि किन आवत ॥
द्रुपद सुता लखि करत पुकारा ।
दीनदयाल विरद सम्भारा ॥
द्वारवती तजि नांगे पायन ।
आतुर आइगये नारायन ॥

प्रथम पाहि मुखते जब काढ़ा ।
प्रगटेउ बसन रूप पट बाढ़ा ॥
बसन रूप धरि बसन समाने ।
धीरज द्रुपद सुता उर आने ॥
खैंचत बसन जोर भरि जेता ।
निकसो बसन बसन मग तेता ॥
देखि चरित्र क्रोध ते पागा ।
परम रोख शठ खैंचन लागा ॥
खैंचत बसन मूढ़ यहि भांती ।
मथत सिन्धु सुर असुर कि पांती ॥
काढ़नि मनहुं शेष भइ सारी ।
दु:शासन जनु देव सुरारी ॥
झिकत सरोख दुशासन सारी ।
निज तन पुरवत बसन खरारी ॥

सोरठा ॥

देखि बसन कै बाढ़ि भक्ति प्रेम वश द्रौपदी ।
भै रोमावलि ठाढ़ि विनय करत गद गद गिरा ॥

चौपाई ॥

गयो शोच मन भयो अनन्दा ।
जय यदुवंश कुमुद बन चन्दा ॥
कृष्णचन्द्र तव मैं बलिहारी ।
जय गोपाल गोबर्द्धन धारी ॥
जय सारंगधर जय असुरारी ।
जय मनमोहन कुञ्ज बिहारी ॥
जय मुकुन्द माधव घनश्यामा ।
कमल नयन शोभा शत कामा ॥
पीताम्बर धर धरनी पालक ।
जय वसुदेव देवकी बालक ॥
जय तव कर सरोज यदुराया ।
कीन्हेंउ जेहि कर मोपर दाया ॥
जे पद सरसिज मम हित धाये ।
दुशासेनि कर दर्प नशाये ॥
जय मधुशूदन यदुपति स्वामी ।
जय त्रिलोक पति अन्तरयामी ॥

जय अधार जय २ अविकारी ।
जय जय जय केशी कंसारी ॥
जय मम लज्जा राखन हारे ।
जयति यशोदा नन्द दुलारे ॥

दोहा ॥

जय कृपाल करुणायतन जयति कौशिला नन्द ।
मोरपक्ष धर मुरलि धर जय २ आनंद कन्द ॥
जयति सच्चिदानन्द हरि ईश्वर भक्त अधार ।
राखी लज्जा जात जिन जय मम नाथ उदार ॥

चौपाई ॥

निर्भय हर्ष विवश पञ्चाली ।
कहि चिग्धरति जयति बनमाली ॥
जय २ कार पूरि महि रहेऊ ।
दुष्टन बिना सबन जय कहेऊ ॥
देवन देखि सुमन झरि कीन्हीं ।
गहगह गगन दुन्दुभी दीन्हीं ॥
बाढ़त देखि बसन चहुं फेरा ।
मन थिर भयो पाण्डवन केरा ॥

हरि प्रताप दिनकर सम भयऊ ।
कौरव सकुचि कुमुद जिमि गयऊ ॥
हरिहि पुकारत द्रुपद कुमारी ।
खैंचत सरुष दुशासन सारी ॥
करत जोर बहु भांति दरेरा ।
बाढ़त बसन सकल चहुं फेरा ॥
अरुण श्याम सित रङ्ग हरेरे ।
भांति भांति के वस्त्र घनेरे ॥
पीतरङ्ग के बहुत निकारे ।
पीताम्बर के ओढ़न हारे ॥

दोहा ॥

मिश्रित रंगके पटबढ़े थके दुशासन हाथ ।
जे देवन देखे नहीं ते पुरये यदुनाथ ॥

चौपाई ॥

आपु बसन तन धरि भगवाना ।
बढ़ये बिबिधि रङ्ग परधाना ॥
द्रुपदी चख पुतरी प्रभु कीन्हा ।
बिरदावलि मूरति करि दीन्हा ॥

खैंचत चीर दुशासन हारा ।
अम्बर मनहुं देवसरि धारा ॥
द्रुपदसुता के अम्बर तेरे ।
निकसे पट बिचित्र बहुतेरे ॥
हारे भुजा दुशासन केरे ।
नहिं समात मन्दिर नृप केरे ॥
दशसहस्र गज बल थकि गयऊ ।
दश गज अम्बर हरन न भयऊ ॥
निपट होत अनरथ लखि बाता ।
नाना भांति होत उत्पाता ॥
शिवा यज्ञशाला बहु बोली ।
ढहे सदन अवनी जब डोली ॥
अशुभ शब्द कृत रासभ श्वाना ।
मेघन बिना व्योम घहराना ॥

सोरठा ॥

हींसे सकल तुरङ्ग हयशाला मह बार यक ।
चिघरे सकलमतङ्ग निजनिज आश्रमविकलसब ॥

चौपाई ॥

भयो दाह दिग करत कागा ।
तदपि न बसन दुशासन त्यागा ॥
बढ़त विलोकि तजै पुनि धरई ।
अनत गहै थल तजि परि हरई ॥
बिदुर दीख अनरथ भा भारी ।
गेउहि गृह बिलपत गन्धारी ॥
कहा रिसाइ मन्त्र सुनु मोहीं ।
होत अकाज न सूझत तोहीं ॥
आजु कृष्ण द्रुपदी तन व्यापे ।
बसन बढ़ाइ बिरद अस्थापे ॥
नहीं होइ सुत धर्म अकाजू ।
जिन के यदुभूषण महराजू ॥
सदा दासकर करत सहाई ।
प्रणतारत भञ्जन यदुराई ॥
जे हरि हने निशाचर राजू ।
सहे दुःख भक्तन के काजू ॥

सोजानी सब बात तुम्हारी ।
नहिं अज्ञान ग्रसित गन्धारी ॥

दोहा ॥

जानि विकल प्रह्लाद जिमि जे हरिभक्त अनन्य ।
सहिश्रम निकसे खम्भ ते कश्यप हते हिरण्य ॥

सोरठा ॥

अब अनेक उत्पात देखिपरत अनरथ निपटि ।
होन चहत सो बात तवतप बलते थंभिरह्यो ॥

चौपाई ॥

अबतैं रानि कहा सुनु मोरा ।
भाग अभाग होत नत तोरा ॥
बसन छुड़ाउ दुशासन करतन ।
चलन चहत नत चक्रसुदर्शन ॥
गन्धारी सुनि अति दुख पाई ।
बिलखत बिदुर सङ्ग उठिधाई ॥
मति दृग सुत खैंचत इत चीरू ।
थको पराक्रम भयो अधीरू ॥

भुज थकि गयो घटत नहिं जाना ।
बसन त्यागि मन अति खिसियाना ॥
निज आसन बैठ्यो शिर नाई ।
मनहुं रङ्क निधि पाइ गवांई ॥
दुर्योधन मन बैठ उदासा ।
मानहुं भयो राजपद नाशा ॥
श्री हत भयो मान मद भङ्गा ।
निपट विकल अपमान तरङ्गा ॥
सुनत शोर मारग श्रुति केरे ।
पूछत दृगमति सञ्जय तेरे ॥
होत कहा यह हाहाकारा ।
सञ्जय कह्यो सहित विस्तारा ॥

सोरठा ॥

सुनत दशा दुखदाय सञ्जय कर गहि पाणि गहि ।
सभा विलोकेउ जाय कुरुपति करी अनीति जो ॥

चैापाई ॥

मध्य सभा कञ्चन सिंहासन ।
जो धृतराष्ट्र नृपति कर आसन ॥

बैठि गये दुगमति तहं जाई ।
परम रोष नहिं वरणि सिराई ॥
दु:शासन कहं नृप ललकारा ।
बार बार करते धिक्कारा ॥
कहि दुर्वचन रोष करि भारी ।
ता अवसर आई गन्धारी ॥
कीन्हेउ दुष्ट कर्म्म अति नीचू ।
परिहो अधम नर्क के बीचू ॥
दीन्हेउ सरुष शाप गन्धारी ।
दुगमति कह सुनु द्रुपद कुमारी ॥
पुत्र वधू ये सकल हमारी ।
मन क्रम बचन अधिक तैं प्यारी ॥
तुम सन सठन कीन अपराधा ।
भइ मम वृद्धापन मह बाधा ॥

दोहा ॥

पुत्री तोहिं मन सप्रशत मन वाञ्छित बर मांगु ।
दुष्टन कीन्ह कुकर्म्म सो मम दिशिते सब त्यागु ॥

चौपाई ॥

अब तुम मम निहोर शिर मानी ।
करहु क्षमा अपराध भवानी ॥
तनया बेगि मांगु बरदानू ।
तुम सम प्रिय मोहिंन कोउ आनू ॥
धर्मराज कुरुपति प्रिय मोरे ।
नाहिंन सुता तदपि सम तोरे ॥
बार बार कह नृप वर मांगू ।
द्रुपद सुता मन करु अनुरागू ॥
बोली बचन जोरि युग पानी ।
सुनहुं नरेश सत्य मम बानी ॥
मोहिं समेत सहित परिवारा ।
दास भाव तजि पाण्डु कुमारा ॥
सो नरेश मांगे म्वहिं देहू ।
दास भाव विनु सकल करेहू ॥
बाहन अस्त्र देहु सब काहू ।
कीजिय वेगि बिदा नरनाहू ॥

मतिद्दग कहो तोहि मैं दीन्हा ।
अपर मांगु यह आयसु कीन्हा ॥

दोहा ॥

सुनहुं पिता कह द्रोपदी मन वाञ्छित वरदान ।
मैं पायउं तुम्हरी कृपा नाथ सपथ नृप आन ॥

चौपाई ॥

तव प्रताप अब कुरु कुल केतू ।
फिरि होइहै सुख सम्पति हेतू ॥
उचित विप्र मांगहिं वर चारी ।
पिता कहत असि नीति विचारी ॥
छत्री तीनि वैश्य कुल दोई ।
मांगहिं एक शूद्र कुल कोई ॥
मैं तुव पुत्र बधू छत्रानी ।
मांगहुं तीनि उचित बर जानी ॥
अब नहिं पिता मनोरथ मोरा ।
नर नायक मम मानि निहोरा ॥
बुद्धि चक्षु चर चतुर बोलाये ।
सबके बाहन अस्त्र दिवाये ॥

चढ़ि बाहन गहि आयुध हाथा ।
चले अवास धर्म नर नाथा ॥
परसे चरण वृद्धिइग केरे ।
बोले भूप युधिष्ठिर तेरे ॥
लज्जा विवश बचन सुनि तोरा ।
हे सुत होत विकल मन मोरा ॥

दोहा ॥

बचन तोर सुनि तात लज्जित अबन समात मैं ।
मोहिं अछत यह बात पुत्र परम अनुचित भयउ ॥

चौपाई ॥

होइ तुम्हार परम कल्याना ।
सुनु अशीस मम बचन प्रमाना ॥
जीति तुम्हारि राज्य सब लीन्हीं ।
दुर्योधन अनीति बड़ि कीन्हीं ॥
सो मैं तुमहिं देत निज पानी ।
लीजै सुत प्रसाद मम जानी ॥
मतिइग आयसु शिर धरि लीना ।
शीस नवाय गवन गृह कीना ॥

प्रथम नरेश कीन्ह जहं डेरा।
द्रोन त्यागि त्यहि अवसर हेरा॥
पटल वितान सेन चतुरङ्गा।
चपल तुरङ्गम चमू मतङ्गा॥
सकल धर्म नन्दन तजि दीन्हा।
सहित कुटुम्ब गवन नृप कीन्हा॥
मिले विदुर मारग मह आई।
जात भये निज भवन लवाई॥
रानिन सहित नृपति अन्हवाये।
खान पान विश्राम कराये॥

दोहा॥

इहां उठी कुरुपति सभा गे सब निज निज धाम।
खान पान विश्राम करि दिवस रहा भरियाम॥
द्रोण करण भीषम शकुनि निज २ गृह मग लीन्ह।
खानपान विश्राम पुनि सब भूपन मिलि कीन्ह॥
प्रथम कीन्ह अस्नान पुनि भोजन करि कुरुनाथ।
सबलसिंह आये सभा दुरद दुशासन साथ॥

———

फुटकर काव्य ॥

दोहा——यथवल्त ॥

गलिन गलिन डोलत फिरैं चहुंदिशि फेरै नैन ।
करैवरै एंठै लरै कहै रसीले बैन ॥ (कञ्जरी)

चौपाई ॥

एक नगरी में बसैं बतीस ।
बारह पशु औ मनई बीस ॥
वहि नगरी को यहै सुभाव ।
कटैं मरैं आवै नहिं घाव ॥ (शतरञ्ज)
एक ग्राम में राजा आठ ।
न्यारे न्यारे सबके ठाठ ॥
सुनो सखी एक अचरिज देखा ।
एक बही में सबको लेखा ॥ (गञ्जीफा)
एक नगरी में सोरह रानी ।
तीनि पुरुष के हाथ बिकानी ॥
मरन जियन उन पुरुषन हाथ ।
कबहुं न सोइं उनके साथ ॥ (चौपड़)

एक नारि मैंरासी कारी।
कान नहीं पर पहिरै बारी॥
नाक नहीं वह सूंघे फूल।
जेता अरज तेतनो तूल॥ (ढाल)

दोहा॥

खग अठारह जीव छह बानी बोलें तीनि।
है कोई ऐसा चतुर लावै इनको बीनि॥
(मोर, सारस, बिलार, हाथी, घोड़ा, चील्ह)

चौपाई—खगनियां॥

हाथी हाथ हथिनियां कांधे।
चले जात हैं बकुचा बांधे॥ (गज, गजी)
आधा नर आधा म्रगराज।
युद्ध बियाहे आवें काज॥
आधा टूटि पेटमें रहे।
बासूकेरि खगिनियां कहे॥ (नरसिंह)
लम्बो चौडी आंगुर चारि।
दुहो ओर ते डारिनि फारि॥

जीव न होय जीव को गहै ।
बासू केरि खगिनियां कहै ॥ (ककई)
चारि पांव बांधे ते मोटि ।
अपने दल मा सबते छोटि ॥
दुखी सुखी सबके घर रहै ।
बासूकेरिखगिनियां कहै॥ (जनानीचोली)

दोहा ॥

कही पहेली बीरबर सुनिये अकबर शाहि ।
रांधीरहतीबहुतदिनबिन रांधीगलि जाहि ॥ (ईंट)

चौपाई ॥

आधा कुवां नीरसों भरा ।
बादशाह के हाथे धरा ॥ (नीमचह)

दोहा ॥

ज़र्दरङ्ग बेसन की नहीं बनाते हैं ।
खाने की कुछ वस्तु नहीं परखातेहैं ॥
(मोहर, अशरफ़ी)

चौपाई ॥

भीतर गूदर ऊपर नांगि ।
पानी पिये परारा मांगि ॥
तिहि को लिखी करारी रहै ।
बासू केरि खगिनियां कहै ॥ (दवाइत)

दोहा——रहीम ॥

नैन सलोने अधर मधु कहु रहीम घटि कौन ।
मीठो भावै लौन पर अरु मीठे पर लौन ॥

कवित्त——यशवन्त ॥

जङ्घै जमाय दुओ घुटुआन लौं पेंडुरी ठीली दुहू दिशि चालै । कानन मध्य में दीठि रहै थिरता करि के कटि नेकु न हालै ॥ जानै तुरङ्गम के मनकी गति चाहिये ता विधि चाबुक घालै । सोई सवार कहै यशवन्त बचाये चलै जो तमाल दिवालै ॥

राम ॥

मन्दिर बनायो बहु वित्तहू कमायो चित्त चौगुनो बढ़ायो सुख पायो या बीच है। पालकी बहल रथ चहल पहल होत घने सुन्दरी महल द्वार दौलति

की कीचहै ॥ सुनु तू दैकान आजु उठत दुकान तेरी अबतौ निदान राम दौलति की खोंचहै । हुएडी के सकारत सकारत सकारो भयो अबतौ सहुकार जूनकारिबो नगोच है ॥

कुब्ज गोपी ॥

छतं थेई थेई करता साहब सबका वोतो नाथों का नाथ कहावै छेजी । जिन्ने आनि मथुरा में अवतार लीना है गोवर्द्धन की पूजा करावै छेजी ॥ जिन्नें नन्द के घरमें आनन्द कीना धार चक्रपै वुन्द वर्षावै छेजी । कहै कुब्जगोपी यमुना तीरही में मुड़ि मुड़ि कान्हरा बंशी बजावै छेजी ॥

प्रवीन ॥

बूझति हौं यक मंच तुम्हे प्रभु शास्त्रन में सब विधि मति गोई । प्राण तजौं कि भजौं सुलतानहिं हौंन लजौं लजि है सब कोई ॥ जाते रहै परमारथ स्वारथ तत्त्व विचारि कहौ तुम सोई । जामें रहै प्रभु की प्रभुता अरु मोर पतिब्रत भङ्ग न होई ॥

दोहा——श्याम ॥

कुन्दन करी उदारता खांड़ निघटि नाजाय ।
बंदोबस्त के कारने नागर बैठे आय ॥

कवित्त ॥

पडुआ मगवाय मुंह बांधौ हलवाइन के चासनी न चाटि जांय जौलै सियरायंगी । मृतिका मंगाइ के कुटाइ डारै भाठन को चूहे अरु चूही कहु कैसे नियरायंगी ॥ चारहूं दिशानते बयारिन को बन्दकीजै उड़ने न पावै जौलौ तौ लौ ठहरायंगी । माछिन को मारि डारौ चीटिन अवार फारै चींटो दई मारी क्या हमारी खांड़ खायंगी ॥ बीसईं पुस्ति हम बांटे हैंगेंदौरे सुनि बड़े २ वैरिनकी छाती फटिजायंगी । नायन अरु बारिन परोसिन परोहतानि छोटे पाय खोटी खरी हमसों कहि जायंगी ॥ सुनुरे हलवाई चलि आई है हमारे यही डेढ़टांक खांड़ चढ़ै औरहु लगि जायगी । फिरिके से छोटे दिमरको से जोटे ज़राकाग़ज से मोटे बनै बात रहि जायगी ॥

ब्रह्म ॥

पूत कुपूत कुलच्छनि नारि लराक परोस लजावन सारो। भाई अदेख हितू कच लम्पट कपटो मीतु अतीत घुतारो॥ साहब सूम किसान कठोर औ मालिक चोर दिवान नकारो। ब्रह्म भनै सुनु शाह अकव्वर बारहु बांधि समुद्रम डारो॥

केशव ॥

शोभत सो न सभा जहं वृद्ध न वृद्ध न ते जे पढ़े कछु नाहीं। ते न पढ़े जे धर्म न चीन्हहिं धर्म न सो जो दया उर नाहीं॥ सोन दया जु न धर्म धरै धर धर्मन सो जहं दान वृथाहीं। दान न सो जहं सांचु न केशव सांचु न सो जो बसै छल छाहीं॥

महेश ॥

सुनि बोल सोहावन तेरे अटा यह टेक हिये में धरौं पै धरौं। मढ़ि कञ्चन चोंच पखावन में मुक्ताहल गूंधि भरौं पै भरौं॥ तुहि पालि प्रवाल के पींजरे में अरु औगुन कोटि हरौं पै हरौं। विछुरे हरि मोहिं महेश मिलैं तोहि कागते हंस करौं पै करौं॥

सवैया——तोष ॥

गोपिन के अंसुवान के नीर पनारे वहे बहिके भये नारे। नारे भये नदियां बहिके नदियां नद ह्वै गये काटि करारे॥ वेगि चलौ तो चलौ ब्रज में कवि तोष कहैं बहु प्रानन प्यारे। वै नद चाहत सिन्धु भये अब सिन्धु ते ह्वैहैं जलाहल सारे॥

दोहा——रहिमन ॥

खीरा शिरसे काटिके मरिये नमक बनाय।
रहिमन करुये मुखन को चहियत यही सजाय॥
रहिमन अंसुआ बाहिरो वृथा जनावत रोय।
घरसे बाहर काढ़िये कौन भेद कहि सोय॥

तुलसी ॥

जगमें दिया अनूप है दिया करौ सब कोय।
करका धरा न पाइये जो पै दिया न होय॥
मीन काटि जल धोइये खाये अधिक पियास।
तुलसी प्रीति सराहिये मुयउ मीत की आस॥

मतिराम ॥

जानत हैं गति चोर की चोर औ साह की साह छली की छली। ठग की ठग कामख कामख की अरु जानत छैल छली को छली ॥ कच लम्पट की कच लम्पट गति मतिराम नजानै कहाधौं चली। कहुं फेरिदयो नथको मुक्तातिहि कारनफिरत गुलाबकली॥

भूप ॥

भूप कहै सुनियो सिगरे मिलि भिक्षुक बीच परौ जनि कोई। कोई परै तौ निकोई करै न निकोई करौ तो रहो चुपमोई ॥ जानत हो बलि ब्राह्मण की गति भूलि कुपन्थ भलो नहिं होई। लेइ कोई अरु देइ कोई पर शुक्र ने आंखि अकारथ खोई ॥

शुकदेव ॥

इन नाती पूतन को हितुके मैं द्वारही द्वार फिरोहै करोड़ो। बांधो रहो ममताकी बरारन ज्यों बली बैल रहै गड़गोड़ो॥ छोड़ि के दीन दयाल की आश

अजानसे। ह्वै मैं अब रंगोड़ो। एक दिना ये छाड़ि हैं मोहिं यही जिय जानि अभय मैं छोड़ो॥

ब्रह्म॥

वृद्ध चढ़े पुनि सूप चढ़े पलना पै चढ़े चढ़े गोद घनाके। हाथी चढ़े फिरि घोड़ा चढ़े सुखपाल चढ़े चढ़े जोम घनाके॥ वैरीऔ मित्र के चित्त चढ़े कवि ब्रह्म भनै दिन बीते पनाके। ईश कृपाल को जानो नहीं अब कांधे चढ़े चलि चारिजनाके॥

चौपाई—घनश्याम॥

बिना पाग जे पहिरैं झंगा।
बिना नोन जे रींधैं सगा॥
बिना खाहं जे रोपैं बगा।
ना वह झंगा न सगा न बगा॥
बिना गुञ्ज बनवावैं गढ़ी।
बिना बढ़ुकी जोतैं लढ़ी॥

बिना हद्दकी रींधैं कढ़ी ।
ना वह गढ़ी न लढ़ी न कढ़ी ॥

घाघ ॥

ढीला बेंटु कुल्हारी डारैं हंसि के मांगैं दम्मा ।
येहो करिके नारि बोलावैं घग्घा तीनि निकम्मा ॥
मुये चाम सों चाम कटावैं भुइमा सकरे सोवैं ।
घाघकहैं येतीनौ भकुआ उढ़रि जायं फिरि रोवैं ॥
तम्बापहिरे हर जोतैं अरु पौला पहिरि निकावैं ।
घाघकहैं येतीनौ भकुआ शिर बोझा अरु गावैं ॥
काजु सरै नहिं पीछे डोलैं सेठा लावैं बीनि ।
जाघर धरैं धरोहरि धारी घग्घा भकुआ तीनि ॥
उधरा काढ़ि करैं व्यवहारा छनिहा घरमें तारा ।
बहिनि पठावै सारे के संग तीनहुं को मुंह कारा ॥

चौपाई ॥

चञ्चल नारि बजारै जाइ ।
ठाढ़े बैठे पानु चबाइ ॥
सङ्गलये भैया को सारो ।
घाघ कहैं कछु दारि सकारो ॥

दोहा ॥

सभा बैठि कै न्याउ न बूझैं गुनी न गुनहिं पढ़ावैं ।
घाघ कहैं येतीनहु नरकी नृपना प्रजा बढ़ावैं ॥
नारी प्रीति न पतिसों मानै जतो प्रीतिहै घरकी ।
राजा ह्वै कै प्रजहि सतावै घग्घा तीनउ नरकी ॥

इति

कवियों का जीवन चरित्र ॥

———+०○०+———

शुकदेव ॥

ये कान्यकुब्ज ब्राह्मण हेमकर के मिश्र कम्पिला नगर के वासी थे आलमगीर बादशाह के समय में देहली नगर को गये बादशाह से भेट की और अपनी विद्या का प्रकाश दिखलाया बादशाह बहुत प्रसन्न हुये एक दिन बादशाह की सभा में कई एक कवि और शुकदेव जी भी बैठे थे कि नगर में किसी के यहां कुछ उत्साह के कारण नौबत बजरही थी बादशाह के कान में वह शब्द पहुंचा बादशाह ने कहा कवि लोगो कहो तो इस नौबत में क्या शब्द निकलता है, और कवियों ने तो अपना अपना मन माना बताया परन्तु शुकदेव मिश्र ने कहा कि जगताश्रय इस बाजा में यह शब्द निकलता है ॥

दोहा ॥

द्वार दमामे ना बजत कहत पुकार पुकार ।
हरि बिसराये पशु भये परत चाम पर मार ॥

बादशाह इस दोहे को सुनतेही बहुत प्रसन्न हुये और मिश्रजी को कुछ रुपया और कविराज उपनाम देकर बिदा किया फिर ये कविराज कुछ दिन देहली में ठहर कर और २ राजा नव्वाबों की भेट की और जिस अमीर के यहां जाते थे वहां बड़ी प्रतिष्ठा पाते थे उस समय में ये मिश्रजी बड़े नामी प्रसिद्ध कवियों की गणना में थे वहां से अपने जन्मस्थान कम्पिला को आये तिस पीछे गढ़-अमेठी के राजा हिम्मतसिंह के यहां गये फिर नव्वाब फज़िल अलीख़ा के यहां गये इस दशा में इन्होंने अपनी काव्य को प्रकाश किया अर्थात् पिङ्गल, रसार्णव, फ़ाज़िलअली प्रकाश अध्यात्म-प्रकाश आदि कई ग्रन्थोंकी रचनाकी और जब वृद्धा-वस्था को प्राप्त हुये तब अपना सम्पूर्ण घर बार त्याग कर श्री गङ्गाजी के तट बैठ कर वहां कुछ

काल सर्व गुणाकर कृपा सागर परमेश्वर के ध्यान में अपना चित्त लगाकर अपने शरीर को त्याग किया ॥

गिरिधर ॥

गिरिधर भाट जयपुर नगर के बासी महाराज जयशाह सिंह जयपुर राज्याधिकारी के समय में थे इन्होंने व्यवहारिक उपदेश में कुण्डलिका कही हैं इनका वचन बहुत पुष्ट और मन रञ्जन है उक्त महाराज ने इनकी बुद्धि की चिमित्कारी देखके इनको कविरायकी पदवी दीथी इन्होंने अपनी काव्य में अपना नाम (गिरिधर कविराय) कहा है, प्राचीन मनुष्यों की कहावत है कि जिसको एक सौ कुण्ड-लिका इनकी जिह्वाग्रहों उसको मन्त्रों से मन्त्र लेनेकी कुछ आवश्यकता नहीं है और यह भी पुराने मनुष्यों का वाक्य है कि गिरिधर जीने कुछ कुण्ड-लिका बनाने का अपने मन में विचार किया था परन्तु वह विचार अधूराही रह गया और आयु काल उनका पूरा होगया तिस पीछे उनकी स्त्री ने शेष कुण्डलिका बनाई हैं जिन कुण्डलियों के

प्रारम्भ में (सई) पद पड़ा है वे उनकी स्त्री की कही हुई हैं ॥

रहीम ॥

शेख़अब्दुलरहीम उपनाम नव्वाब खानखानान का भाग है ये महाराज देहली के महा प्रतापी जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर बादशाह के मन्त्री थे अरबी, फ़ारसी विद्या में ता निपुणही थे परन्तु संस्कृत में बहुत अच्छे पण्डितों की गणना में थे कवि, पण्डितों, चतुरों का बहुत आदर सत्कार करते थे दान में बड़ उदारचित्त, धर्म्म सम्बन्धी वार्ता में सदैव तत्पर रहा करते थे इन्होंने बहुत से दोहे हिन्दी भाषामें कहे हैं जिनके सुननेसे उनकी बुद्धि-वानी सूचित होती है किसी दोहे में रहीम और किसी दोहे में रहिमन अपना भाग डाला है यह जो गोमती नदी का पुल यवनपुर अर्थात् जवनपुर के समीप बना है वह इन्हीं खानखानान के चेला फ़हीम का बनवाया हुआ है ॥

जलील ॥

सय्यद अब्दुलजलील बिलग्राम के बासी थे अ़रबी,
फ़ारसी, हिन्दी भाषा में बहुत निपुण थे औरंग ज़ेब
बादशाह के समय में इन को सिफ़ारत की ख़िलत
अर्थात् दूतता का ओहदा मिला था ये सय्यद साहब
देहली से ईरान् के बादशाह के पास भेजे गये थे वहां
फ़ारसी विद्या के पढ़ने में बहुत श्रम किया था और जब
ईरान से पलट कर देहली में आये तब औरंग-
ज़ेब बादशाह के यहां और २ बादशाहों के नाम
ख़त लिखने के मुंशी हुये इन्हों ने अ़रबी, फ़ारसी,
में कई पुस्तकों की रचना की है और हिन्दी भाषा
में जो काव्य की रचना की है तिस में अपना भोग
(जलील) कहा है हिन्दी भाषा में इनके गुरु हरि-
वंश मिश्र बिलग्राम के बासी थे॥

गुरुदत्त ॥

गुरुदत्त कान्यकुब्ज ब्राह्मण सुकुल कनवज के
समीप मकरन्द नगर के बासी हिन्दी भाषामें बहुत
अच्छे कवि थे इन्होंने फुटकर काव्य तो बहुत की

है परन्तु (पक्षीविलास) नामक एक पुस्तक कही है जिसमें सब पक्षियों का जुदा २ रङ्ग ढङ्ग स्वभावादि का वर्णन किया है जिन दिनों पक्षी विलास की रचना करते थे तब कबूतर पक्षी के वर्णन में (गुरुदत्त तुम्हें यह छांड़िबे टोला) यह पद अन्त में कह गये जब पीछे को शोचा तो जाना कि यह वाक्यागन पड़ गया है सो मिथ्या न होगा अब अवश्य करके यहां का वास छूटैगा दैव योग से गोरख पुरकी ओर किसी राजा के यहां गये वहां बहुत मान से ठहराये गये दो ग्राम राजा ने नानकार दिये वहां गुरुदत्त जी रहने लगे और विक्रम के १८६३ संवत् में इस संसार से पधारे ॥

रामप्रसाद ॥

ये कवि बिलग्राम के रहने वाले जाति के भाट थे नायका भेद में बहुत प्रवीण लखनऊ के बादशाह मुहम्मद अलीशाह के समय में थे ॥

श्री लाल ॥

पण्डित श्रीलाल गुजराती ब्राह्मण शास्त्रावदीच

जयपुरके राज्य में भांडेर ग्राम के बासी थे संस्कृत में बहुत निपुण थे आगरे के कालेज में भी कुछ दिन पढ़ाया संवत् १८४८ ईसवी में जब पश्चिमोत्तर देशीय मथुरा आदि आठ ज़िलओं में सर्कारी पाठशाला नियत हुये तब ये पण्डितजी श्रीयुत वजीटर जनरल साहब बहादुर पश्चिमोत्तरदेशीय पाठशालाधिकारी की आज्ञानुसार नवीन पुस्तकोंकी रचना हिन्दीभाषा में करते थे और बहुतसी पुस्तकोंका उल्था हिन्दीभाषा में किया है अब जो पुस्तकें हिन्दी भाषाकी पश्चिमोत्तर देश में पढ़ाई जाती हैं उनमें बहुत करके उन्ही पण्डित जी की रचनाकी हैं जैसे शालापद्धत, समय प्रबोध, अक्षरदीपिका, गणितप्रकाश, बीजगणित, भाषाचन्द्रोदय, ईश्वरतानिदर्शन, ज्ञानचालीसी आदि हैं ॥

जब सन् १८५२ ईसवी में आगरा नगर में नारमलस्कूल नियत हुआ तब ये पण्डित जी वहां के हेडमास्टर नियत किये गये पांच वर्ष उस स्कूल के हेडमास्टर रह कर चन्देली ज़िलअ के डिपुटी

इन्स्पेक्टर हुये फिर सन् १८५८ ई० में गवालियार के कालेज के हेडमास्टर १५०) रुपये मासिक के नियत हुये ये महाराज संस्कृत तो जानतेही थे परन्तु गणित विद्या में ऐसे कुशल थे कि इस समय में इनको गणिताचार्य्य कहना चाहिये सन् १८६७ई० में ज्वरादि रोग में ग्रसित हुये और आगरा नगर में आकर श्रीयमुनाजी के समीप शरीर त्याग करके सुरलोक का मार्ग लिया ॥

नारायण ॥

नारायण कविजीने संस्कृत में हितोपदेश नामक पुस्तक से उसका उल्था हिन्दी भाषा में किया है परन्तु अपना ग्राम और संवत् कुछ भी नहीं लिखा है इससे उनका और कुछ व्योरा नहीं ज्ञात होता है ॥

तुलसीदास ॥

ये सरयूपारीण ब्राह्मण राजापुर नामक ग्राम यमुना जी के दक्षिण तट प्रयाग राज से १५ कोस पश्चिम के रहने वाले थे प्रथम तो पाण्डित्य के द्वारा

अपना निर्वाह करते थे परन्तु अन्त को अपनी स्त्री के उपदेश से संन्यास धारण करके अयोध्या पुरी, चित्र कूट, काशीजी आदि तीर्थों में रहते रहे श्रीरामचन्द्र जीके उपासक थे इसी संन्यास धर्म्म में रामायणकी रचना सात प्रकार की की है अर्थात् रामायण, कवितावली, दोहावली, विनयपत्रिका आदि और बहुत सी फुटकर काव्य कही है मरण समय से पहिले तुलसी दास जीको यह ज्ञान होगया था कि मैं अमुक दिन इस संसार से पधारूंगा तब यह दोहा लिख कर अपने मित्रों को दिखा दिया ॥

दोहा ॥

संवत् सोरह से असी असीवरुण के तीर ।
श्रावण शुक्ला सप्तमी तुलसी तजे शरीर ॥

उनके लेखानुसार उनका देहान्त हुआ ॥

शिवप्रसाद ॥

ये बाबूजी मुर्शिदाबाद के राजा डालचन्दजी के प्रपैात्र हैं बंगला, संस्कृत, अ़रबी, फ़ारसी, अंगरेज़ी विद्याओं में बहुत कुशल हैं परन्तु बहुत प्रमाणिक

लोग कहते हैं कि ये बाबूजी ग्यारह विद्या के लिखने पढ़ने में अभ्यास रखते हैं ये बाबूसाहब बहुत दिनों से सर्कारी काम पर नियुक्त हैं अब इन दिनों काशीआदि कई ज़िलओं के पाठशालाओं के इन्स्पेक्टर हैं और हिन्दी, उर्दू भाषा में बहुत सी पुस्तकों की रचना की है इबारत ये बाबूसाहब ऐसी लिखते हैं कि जिसके पढ़ने और सुनने से जीनहीं भरता है ये बाबूजी अंगरेज़ी सर्कार के बड़े ख़ैरख़्वाह हैं और बुद्धि विद्या के तो जानो मूर्तिही हैं बहुधा जब कभी श्रीयुत गवर्नर जनरल बहादुर हिन्दुस्तानाधिकारी को कुछ हिन्दुस्तान के विषय में पूछने के लिये प्रतिष्ठित मनुष्यों की सम्मति लेना आवश्यक होती है तब ये बाबूजी भी बुलाये जाते हैं ईसवी संवत् १८५७ में जब ग़दर हुआ था तब बाबूजी ने बड़ी खैरख़्वाही की थी जिसके वेतन में श्री मती महारानी इङ्गलिस्तान और हिन्दुस्तानाधिकारणी क्वीन् विक्टोरिया ने प्रसन्न होकर इनको (सितारहिन्द) का ख़िताब दिया है॥

वंशीधर ॥

वंशीधर कान्यकुब्ज ब्राह्मण वाजपेई वैस वाड़े में रायबरेली के ज़िले चिन्ताखेड़ा के रहने वाले हैं संस्कृत विद्या में बहुत कुशल भाष्यान्त तक व्याकरण इनका पढ़ा है और कुछ यह भी नहीं कि अपने घर में येई पण्डित हुये हैं इनके पूर्व पुरुषों में बड़े २ पण्डित होगये हैं पहिले ये पण्डित जी पश्चिमोत्तर देश के सरिश्तःतालीम में पुस्तकों का उल्था करते थे तिस पीछे आगरा के नार्मल स्कूल में सिकण्ड मास्टरी पर नियत किये गये जब पुस्तकों का उल्था करते थे तब बहुत सी पुस्तकें हिन्दी भाषा और बहुत सी उर्दू भाषा में उल्था की हैं और बहुत सी अपनी युक्ति से नवीन पुस्तकें बनाई हैं ॥

देव ॥

देवदत्त कान्यकुब्ज ब्राह्मण त्रिपाठी कनवज नगर के समीप कुसुमड़ा ग्राम के रहने वाले लखनऊ के नव्वाब वज़ीर शुजाउद्दौला के समय में हुये थे पहिले तो और २ राजा नव्वाबों के यहां जाया

करते थे पिछाड़ी को उक्त नव्वाब साहब के यहां आये नव्वाब साहब ने इनकी कविताई और चतुराई देखकर इनकी प्रतिष्ठा की और कुछ वर्षोड़ा निबन्ध कर दिया ये कवि बंगला में जिसको फ़ैज़ाबाद कहते हैं रहने लगे, इन्होंने अपनी काव्य की रचना में शब्द रसाइन, अष्टजाम ये दो पुस्तकें रस काव्य में बहुत अच्छी कही हैं और फुटकर सामयिक काव्य भी की है और अपना भोग (देव) कहा है ॥

केशव दास ॥

केशव दास सनाढ्य ब्राह्मण थे देहली के महा प्रतापी अकबरबादशाह के समय में हुये थे उस समयसे अब तक के और किसी कविने ऐसी गुरुआशय की चमकदार काव्य की रचना नहीं की है ओरछा के राजा इन्द्रजीत के यहां ये कविजी रहा करते थे वहां उन्हीं राजा के नाम से चार पुस्तकें अर्थात् रामचन्द्रिका, रसिकप्रिया, कवि प्रिया, विज्ञानगीता की रचना की थी जिसमें विज्ञानगीता तो ज्ञान के विषय में और शेष तीनों रसकाव्य हैं जिनका आशय

कहना बहुत कठिन है इससे जाना जाता है कि केशव दासजी पिङ्गल, नायका भेद, अलङ्कार, लक्षणा व्यञ्जना, कोष आदि जो काव्य के अङ्ग हैं तिनमें बहुत विज्ञ थे प्राचीन लोग कहते चले आते हैं कि रसिकप्रिया के एक कवित्त का एक चरण (मखतूल के झूल झुलावत केशव भानु मनो शनि अङ्कलिये) ऐसा लिखा है जिसमें असम्भव उपमा होगई है जिससे स्वप्न में श्रीराधा महारानी जीने कहा कि तुम्हारी प्रेतों कीसी बुद्धि है तुम प्रेत होवोगे तिस पीछे कुछकाल व्यतीत कर ओरछा में प्रेत यज्ञ करके केशवदासजी ने अपना शरीर त्याग किया और प्रेत हुये ॥

नरोत्तम ॥

नरोत्तम ब्राह्मण सीतापुर के ज़िलअ़ बाड़ी नामक ग्राम के वासी थे जिन्होंने सुदामा चरित्र एक छोटी पुस्तक की रचना की है जिसमें श्रीकृष्णचन्द्र महाराज और सुदामाजी के प्रेम प्रीति की भेटका वर्णन है ॥

भोलानाथ ॥

भोलानाथ ब्राह्मण कनवज नगरके बासी थ इन्हों ने बैताल पच्चोसी को भाषा छन्द में रचना की है ॥

सबलसिंह ॥

सबल सिंह चौहान छत्री चन्द्रगढ़ के राजा थे इन महाराज के कोई पुत्र न था इस लिये बहुत से सज्जन यान्त्रिक मान्त्रिक पण्डित बुलाकर पुत्र उत्पन्न होने के हेत देव पूजन का प्रारम्भ कराया बहुत दिनों तक पूजन होता रहा परन्तु पुत्र होने की कुछ आश न हुई जब इस बात से राजा और पण्डित सब निराश हुये तब सब पण्डितों ने एकमत होकर कहा कि महाराज यदि आपके पुत्र होता तो यही तो था कि आपका नाम चलता सो उस नाम के टूटजाने का सन्देह था तिससे उत्तम यह है कि हम सब लोग मिल कर आप के नाम से एक पुस्तक की रचना करें जिससे हज़ारों वर्ष आपका नाम इस भू मण्डल पर बना रहै इस बातको राजाने स्वीकार किया और आज्ञा दी कि महाभारत जो संस्कृत

में है उसको भाषा काव्य में कहो तब सब पण्डितों ने विक्रम के संवत् १७२७ में महाभारत को भाषा छन्द प्रबन्ध में कहने का प्रारम्भ किया और कुछ काल में सम्पूर्ण भारतको भाषा काव्य में सबलसिंह जीके नाम से कहा है ॥

यशवन्तसिंह ॥

यशवन्त सिंह बघेले त्वी तिरवा नामक ग्राम कनवज नगर से छः कोस दक्षिण के राजा थे संस्कृत विद्या में पण्डित, काव्य में बड़े कवि, समर में बड़े शूर, योग तप में योगी, पण्डित, कवि, गुणी लोगों का आदर सत्कार बहुत करते थे संस्कृत के अठारहों पुराण उन्होंने अपने पुस्तकालय में रक्खे थे वे अब तक उनके पौत्र राजा इन्द्रनारायण जी के यहां विद्यमान हैं,भाषा काव्य की रचना करने में बड़े कुशल थे शृङ्गार शिरोमणि, शालहोत्र दो पुस्तकों कीरचना की जिनमें अपना भोग यशवन्त कहा है, इन महाराज जीके कोई पुत्र न था इस कारण अपने भाई का पुत्र गोद लियाथा और ताल

और श्री दुर्गा जी का मन्दिर बनवाने के मनोर्थ से तीन लाख रुपये ख़र्च करने का सङ्कल्प करके काशी जी मे बहुत उत्तम पाषाण का मन्दिर और ताल के दरवाज़े मंगवा कर ताल और मन्दिर बनवाने का प्रारम्भ किया परन्तु ताल तो महाराज जीके मनका आना बन चुका और मन्दिर पनियां सोत से जुड़कर पृथ्वी तल तक आने पाया था कि एक दिन रात्रि के समय महाराज को कुछ ज्वर आया दो चार दिन ज्यों त्यों कर बीते अन्त को अबश होकर विक्रम के संवत् १८७१ में इस अनित्य निर्मूल संसार को त्याग कर स्वर्ग का मार्ग तकाया उनके पश्चात उनके छोटे भाई पीतम सिंह जी जो उनके स्थानापन्न हुये उस मन्दिर को पूरा किया जिन लोगों ने उस मन्दिर को देखा है वे कहते हैं कि गङ्गा और यमुना के बीच में ऐसा दूसरा मन्दिर नहीं है ॥

खगनियां ॥

रञ्जीत पुरवा नामक ग्राम जो उन्नाम के ज़िले में है वहां एक बासू नामक तेली की लड़की (खगनियां)

नामक थी यद्यपि कुछ पढ़ी लिखी न थी परन्तु पहेली बनाने में बहुतही कुशल थी,लोग कहते हैं कि खगनियां अपने व्याह के थोड़े ही दिन पीछे बिधवा होगई तब उसने अपने पिता और अपना नाम चलने के हेतु पहेलियों की रचना में मन लगाया ॥

ब्रह्म ॥

राजा वीरवर का भोग है ये महाराज कान्यकुब्ज द्विवेदी अर्थात दुबे ब्राह्मण कान्हपुर से दक्षिण ओर यमुना जीके समीप बाराअकबर पुर के रहने वाले थे अकबर शाह बादशाह के बड़े नामी मुसाहबों में शिरोमणि थे शास्त्र विद्या में पण्डित, दान में कर्ण और विक्रम, शील का समुद्र, धर्म्म कर्म्म में यमदग्नि, बुद्धि में बृहस्पति के सदृश्य, सच पूछिये तो राजा वीरवर जी को विप्र वंश अवतंश कहना चाहिये तो थोड़ा है क्योंकि उस समय से अब तक कोई और दूसरा ब्राह्मण ऐसे दर्जे को नहीं पहुंचा और न नाम चलाया कि जो आज तक कहावत चली जाती है कि इस मनुष्य वा उस लड़के अथवा वे राजा की

बुद्धि को क्या कहना है वे तो मानो दूसरे वीरवर हैं, उन्होंने जो काव्य भाषा में की है वह बहुत मन रञ्जन है ॥

राम ॥

रामशरण कान्यकुब्ज ब्राह्मण हमीर पुर के निकट किसी ग्राम के रहने वाले थे, राजा हिम्मतगिरि ब-हादुर जो शुजाउद्दौला नव्वाब के सूबेदार थे तिन के यहां रहा करते थे साधारण कवि थे फुटकर जो कुछ काव्य की है उसमें अपना भोग राम कहा है ॥

कुञ्जगोपी ॥

गौड़ ब्राह्मण जयपुर की राज्य के रहने वाले थे साधारण काव्य की है कोई ग्रन्थ नहीं निर्म्माण किया है इस कारण उनके विशेष समाचार नहीं जाने गये ॥

प्रवीण ॥

ओरछा नगर के राजा महाराज इन्द्रजीत के यहां एक वेश्या थी जिसका नाम रायप्रवीण था यद्यपि वह वेश्या थी परन्तु कुछ विद्यावान और काव्य की रचना भी करती थी प्राचीन लोग कहते हैं कि वह

बहुत बुद्धिमान थी इसी कारण महाराज इन्द्रजीत
जीकी सम्पूर्ण सभा उसको रायप्रवीण कहती थी एक
बार अकबर शाह बादशाह ने उसकी चतुराई सुन
कर उसको बुलाया जब वह सभा में गई और उचित
स्थान पर खड़ीकी गई तब बादशाह ने अपने मनमें
यह शोचा कि यदि इस समय इसकी चतुराई की
वार्त्ता सुनी जावे तो राज्य सम्बन्धी कार्य्य में बिघ्न
होगा इस्से रात्रि की सभा में इसका वार्त्तालाप सुनना
उचित है चोबदार को आज्ञा हुई कि इस समय
इसको लेजाओ रात्रि को लाइयो परन्तु वह तो
वेश्या उसके जीमें कुछ औरही बात आई उसने हाथ
जोड़ शिर झुकाय कर यह दोहा पढ़ा ॥

दोहा ॥

बिनती राय प्रवीण की सुनिये शाह सुजान ।
जूठी पत्तल भषत हैं बारी बायस श्वान ॥

बादशाह यह सुनके चुप साध रहे और कहा
कि इसको अपने घर पहुंचा दो वह अपने घर आ-

रक्षा में आई जो कुछ फुटकर दोहे छन्द उसने कहे हैं तिनमें बहुधा अपना भोग प्रवीण कहा है ॥

श्याम ॥

श्याम लाल कवि का भोग है ये कवि कोड़ा जहानाबाद के निकट किसी ग्राम के रहने वाले थे गाजीपुर असोथर के राजा भगवन्तसिंह खीचर के यहां रहते थे साधारण कवि थे फुटकर काव्य की है ॥

महेश ॥

महेशदत्त पांड़े कान्यकुब्ज ब्राह्मण कन्नौज नगर के निकट मीरा की सराय के बासी थे ज्योतिष विद्या में बहुत विशेष भाषा काव्य में कोष पिङ्गल अलङ्कार नायका भेद के जानने वाले थे अयोध्या के राजा महाराज सरमान सिंह बहादुर कायमजङ्ग के यहां रहते थे सामयिक काव्य करते थे सन् १८६३ ई० में अर्धाङ्ग रोग के कारण कुछ दिन रोग भोग कर अपने जन्म स्थान पर शरीर त्याग किया ॥

तोष ॥

तोष निधि कान्यकुब्ज ब्राह्मण कम्पिल नगर के

वासी संस्कृत में पण्डित भाषा काव्य में बड़े कवि फर्रुख़ाबादके नव्वाब कायमखां के यहां रहा करते थे इन्होंने अपनी काव्य में अपना तोष भोग कहा है इनकी काव्य रचना में एक छोटी सी पुस्तक व्यङ्गशतक नाम जिसमें सौ दोहे हैं बहुतही उत्तम बनी है जिसके देखने से यह सूचित होता है कि ईश्वर से मोक्ष मांगने में ऐसे वचन कहे हैं जैसे कोई अपने बाप दादा के ऋणी से अपना रुपया मांगता है इस स्थान पर दृष्टान्त के लिये दो दोहे तोष जीकी काव्य के लिखे जाते हैं जिस्से उनकी ढिठाई करना निश्चय है ॥

दोहा ॥

विश्वम्भर नामैं नहीं कि महीं विश्व मों नाहिं।
इन द्वै मों झूठो कवन यह संशय मन माहिं ॥ १
शेष सहस मुख नित रटत तासों अफरत नाह।
नाम जपै वो दीन सों कहा हिये अति चाह ॥ २

इस वाक्य के सिवाय और फुटकर काव्य सामयिक की है ये तोषजी मुहम्मद शाह बादशाहके समयमें थे ॥

मतिराम ॥

ये कवि कान्यकुब्ज त्रिपाठी ब्राह्मण टिकमांपुर ग्राम के रहने वाले थे काव्य कोष में बहुत निपुण संस्कृत में अच्छे पण्डित औरङ्गजेब बादशाह के यहां बहुधा रहा करते थे समस्या पर कवित्त कहते थे अपनी काव्य रचना में रसराज, ललित ललाम ये पुस्तकें नायका भेद की कही हैं ॥

भूप ॥

भूपनारायण भाट कान्हपुर के ज़िले में काकूपुर ग्रामके रहने वाले नव्वाब शुजाउद्दौला के समय में हुये थे भाषा काव्य की शक्ति थी शिवराज पुर के राजा की वंशावली छन्द प्रबन्ध में कही है और सामयिक काव्य भी कही है ॥

घनश्याम ॥

ये कवि कान्यकुब्ज ब्राह्मण इटावे के ज़िले के किसी ग्राम के बासी थे नव्वाब आसफ़द्दौला के समय में मियां अल्मास अलीख़ां की छावनी जब इटावे के समीप कुदरकोट ग्राम में थी तब ये

घनश्यामजी मियां साहब को सभा में आया करते थे वहां समय पाकर इसी प्रकार के सामयिक चौतुका कहते थे जिनमें रेफ नहीं बोला जाता है ॥

घाघ ॥

ये कवि कान्यकुब्ज ब्राह्मण कान्हपुर के ज़िले के किसी ग्राम के बासी थे साधारण काव्य सामयिक चौतुका या दोहे कहते थे ॥

अपूर्व-अज्ञात शब्दों का तात्पर्य्य ॥

———oo———

पु=पुल्लिङ्ग सं=संस्कृत अ=अरबी
स्त्री=स्त्रीलिङ्ग भा=भाषा ए=एकवचन
न=नपुंसकलिङ्ग फ़ा=फ़ारसी ब=बहुवचन

[अ]

अयोध्या प्रसाद, पु० ए० सं० लाला अयोध्या प्रसाद खत्री विलग्राम के रहने वाले, लखनऊ के बादशाह मुहम्मद अली शाह के निज दीवान का नाम है।

अरुण, न०ए०सं० लाल, प्रात समय का सूर्य्य।

अब्रबहारी, पु०ए०फ़ा० बसन्त ऋतु का बादल।

अनित्य, पु०ए०सं० जो सदैव न रहे।

अम्बरीष, पु०ए०सं० एक राजा का नाम है।

अटक, स्त्री०ए०भा० पञ्जाब देश की नदी है।

अदेव, पु०ए०सं० राक्षस, निशिचर।

अन्ध, पु०ए०सं० नेत्रहीन, शूर, अन्ध धृतराष्ट्र
एक दैत्य का नाम।

अन्धक, पु०ए०सं० महादेव जी।

अभिषेक, पु०ए०सं० तिलक, टीका, रोचना।

अनुकूल, पु०ए०सं० प्रसन्न।

अप्रमेय, पु०ए०सं० बेप्रमाण, जिसका प्रमाण नहो।

अन्तक, पु०ए०सं० अन्त करने वाला, एक राक्षस का
नाम है।

असि, स्त्री०ए०सं० खड्ग, तलवार।

अकाशनदी, स्त्री०ए०सं० मन्दाकिनि नदी।

असुहर, पु०ए०सं० प्राण हरने वाला, राम चन्द्रजी के
एक बाण का नाम है।

अवदात, पु०ए०सं० दाता, देनेवाला।

अनाधार, पु०ए०सं० जिसका आधार न हो, जिसको
ठहरने का स्थान नहो, बे सहारा।

अक्ष, पु०ए०सं० चौपड़ खेलने के पाँसा।

अहमित, पु०ए०सं० अतुल, बेमान।

अश्वत्थामा, पु०ए०सं० द्रोणाचार्य्य के पुत्रका नाम।

अश्रुपात, पु० ए० सं आंसू गिरना, रोना ।
अन्तरिक्ष, पु० ए० सं पृथ्वी और आकाश का बीच ।
अवनि, स्त्री० ए० सं० पृथ्वी, ज़मीन ।
अष्टधातु, पु० ब० सं० आठ धातु ये हैं सोना, चांदी,
तांबा, रांगा, सीसा, जस्ता, लोहा, पारा ।
अङ्गारमती, स्त्री० ए० सं० कर्ण की स्त्री का नाम ।
अजातिअरि, पु० ए० सं० युधिष्ठिर ।
आनन, न० ए० सं० मुख ।
आसु, पु० ए० सं० शीघ्र, जल्द ।

[इ]

इलतमिस, पु० ए० अ० देहली के एक बादशाह का
नाम ।
इन्द्रजीत, पु० ए० सं० रावण का पुत्र मेघनाद ।
इन्द्रजीत जित, पु० ए० सं० लक्ष्मण ।
इन्द्रगयन्द, पु० ए० सं० इन्द्र का हाथी, ऐरावत ।

[ई]

ईश, पु० ए० सं० स्वामी, मालिक ।
ईर्षा, स्त्री० ए० सं० द्वेष ।

[उ]

उलूक, पु० ए० सं० घुघुआ ।

[ऐ]

ऐश्वर्य्य, पु० ए० सं० तेज,प्रताप ।

[क]

कपोत, पु० ए० सं० कबूतर ।

कटक, न० ए० सं० सेन,फ़ौज,बङ्गाले देश में एक नगर का नाम ।

कमण्डल, न० ए० सं० तूंबा,तांबा ।

कल्पद्रुम, न० ए० सं० कल्प वृक्ष ।

कलिन्द्र, न० ए० सं० पर्वत,पहाड़ ।

कर्क, पु० ए० सं० एक दैत्य का नाम ।

कबन्ध, पु० ए० सं० एक राक्षस का नाम ।

कनकसूत्र न० ए० सं० सोने के दाने जो सूतके धागे में पिरोहे हो,माला ।

कर्ण, पु० ए० सं० कुन्तीपुत्र, युधिष्ठिर का भाई ।

कर्पूरतिलक, पु० ए० सं० एक हाथी का नाम ।

करवाल, स्त्री० ए० सं० तलवार ।
कम्बुक, पु० ए० सं० दुर्योधन के एक भाई का नाम ।
कलहंस, न० ए० सं० छन्द विशेष ।
करटक, पु० ए० सं० एक सियार का नाम ।
कालकेतु, पु० ए० सं० कालका पताका, प्राणलेने वाला ।
कायर, पु० ए० भा० डरपोक, भगोड़ा ।
कालकूट, पु० ए० सं० विष, ज़हर ।
कामी, पु० ए० सं० दुर्योधन के एक सेवक का नाम ।
कालनिशि, स्त्री० ए० सं० दिवाली की रात्रि ।
किङ्करी, स्त्री० ए० सं० दासी, टहलुई, चेरी ।
कुन्ती, स्त्री० ए० सं० युधिष्ठिर की माता ।
कुरु, पु० ए० सं० पाण्डव कौरव के पुरुषों में एक
राजा का नाम ।
कुरुनन्दन, पु० ए० सं० दुर्योधन ।
कुटनी, स्त्री० ए० भा० जो स्त्री झूठ सच कह कर
और स्त्रियों को बहकावे ।
कुठार, पु० ए० सं० फरसा ।
कृतान्त, पु० ए० सं० यम ।

कृपाचार्य्य, पु० ए० सं० दुर्योधन के यहां के एक
बलवान योधा का नाम।

केसरी, पु० ए० सं० सिंह, हनुमान के पिता का नाम।

कैटभ, पु०ए०सं० एक दैत्य का नाम।

कोदण्ड, पु० ए० सं० धनुष।

कौरव, पु०ब०सं० कुरु राजा के बंश में जो उत्पन्न हो।

[ग]

गदा, स्त्री०ए०सं० लाठी।

गदगद, पु०ए०भा० दुःख अथवा सुख में मुख से
वचन न निकलै उस दशा का नाम।

गहवर, पु०ए०भा० घबड़ाना।

गङ्गाधर, पु०ए०सं० दुर्योधन के दलमें एक राजा था

गङ्गासुत, पु०ए०सं० भीष्म पितामह।

गङ्गोदक, पु०ए०सं० गङ्गाजल, एक प्रकार का छन्द।

गजपुर, पु०ए०सं० हस्तिना पुर।

गीतका, न०ए०सं० एक प्रकार का छन्द।

गोदावरी, स्त्री०ए०सं० एक नदी का नाम।

[च]

चर्म्म, न० ए० सं० ढाल ।

चराचर, न० ब० सं० चर और स्थिर ।

चामर न० ए० सं० एक प्रकार का छन्द ।

चारहु युग, न० ब० भा० सतीयुग, त्रेता, द्वापर, कलि ।

चित्रग्रीव, पु० ए० सं० एक कबूतर का नाम ।

चैद्यसुत, पु० ए० सं० शिशुपाल का पुत्र ।

चौपाई, स्त्री० ए० भा० एक प्रकार का छन्द ।

चञ्चरीक, न० ए० सं० एक प्रकार का छन्द ।

[ज]

जमलबन्धु, पु० ए० सं० अर्जुन ।

जाम्बुवान, पु० ए० सं जामवन्त ।

जामवन्त, पु० ए० भा० एक बलवान रीछ का नाम ।

[त]

तनत्राण, पु० ए० सं० शरीर की रक्षा ।

ताड़का, स्त्री० ए० सं० एक राक्षसी का नाम ।

तारक, न० ए० सं० एक प्रकार का छन्द ।

तालमाली, पु० ए० सं० दुन्दुभि दैत्य के हाड़ के
वृक्षका नाम, ताड़वृक्ष ।

तून, न० ए० सं० तर्कस ।

त्राता, पु० ए० सं० रक्षक ।

त्रास, पु० ए० सं० डर, भय ।

त्रिभङ्गी, न० ए० सं० एक छन्द का नाम ।

त्रिशिरा, पु० ए० सं० एक राक्षस का नाम ।

तृष्णा, स्त्री० ए० सं० इच्छा ।

तोमर, न० ए० सं० एक छन्द का नाम ।

त्रोटक, न० ए० सं० एक छन्द का नाम ।

[द]

दण्डक, न० ए० सं० एक छन्द का नाम ।

दम्भ, पु० ए० सं० थोरी बात को बहुत कहना ।

दशरथ, पु० ए० सं० अयोध्या के राजा, श्री रामचन्द्र
जी के पिता ।

दमनक, पु० ए० सं० एक सियार का नाम ।

दमोदरमास, पु० ए० सं० कार्त्तिक का महीना ।

दलचतुरङ्ग, पु० ए० सं० जिस दल में चार प्रकार के योधा हों, हाथीपर, घोड़पर, रथपर, पैदल।

दिग्पाल, पु० ए० सं० दिशाका रक्षा करने वाला।

दिग्दाह, पु० ए० सं० दिशाकी ओर प्रकाश होय।

दिमिरकी, स्त्री० ए० हिं० भा० चमड़े की चकती जो चर्खा के तकुये में लगती है।

दुर्योधन, पु० ए० सं० धृतराष्ट्र के बड़े पुत्र का नाम।

दुःशासन, पु० ए० सं० दुर्योधन के एक भाई का नाम।

दुरद, पु० ए० सं० दुर्योधन के एक भाई का नाम।

दुर्जन, पु० ए० सं० दुष्ट।

दूषण, पु० ए० सं० एक राक्षस का नाम, लाग लगाना, दोष लगाना।

दूरदन्ती, पु० ए० सं० एक हाथी का नाम।

देव, पु० ए० सं० देवता।

दोधक, न० ए० सं० एक छन्द का नाम।

द्रोण, पु० ए० सं० पाण्डव कौरव के गुरू।

द्रोणनन्द, पु० ए० सं० द्रोण का पुत्र, अश्वत्थामा।

द्वारावती, स्त्री० ए० सं० द्वारिका पुरी।

द्यूतकर्म्म, न०ए०सं० जुआ खेलना ।
द्रुपद, पु०ए०सं० द्रौपदी के पिता ।
द्रुपदसुता, स्त्री०ए०सं० द्रुपदराजा की कन्या ।
द्रौपदी, स्त्री०ए०सं० पाण्डव की स्त्री, राजा द्रुपद की पुत्री ।

[ध]

धरा, स्त्री०ए०सं० पृथ्वी, धरती, ज़मीन ।
धर्मकुमार, पु०ए०सं० युधिष्ठिर ।
धर्म्मराज, पु०ए०सं० युधिष्ठिर ।
धनञ्जय, पु०ए०सं० अर्जुन ।
ध्रुव, पु०ए०सं० एक राज कुमार का नाम ।
धृतराष्ट्र, पु०ए०सं० दुर्योधन के पिता ।
धेनुमुख, पु०ए०सं० एक प्रकार का बाजा ।

[न]

नल, पु०ए०सं० एक बानर का नाम ।
नाग नगर, न०ए०सं० हस्तिना पुर ।
निकुम्भिला, पु०ए०सं० राक्षसों के पूजन करने का स्थान ।

नित्यनिमित्त, पु०ए०सं० प्रतिदिन करना ।
निर्जन, न०ए०सं० जहां मनुष्य न हो ।
निरन्तर, न०ए०सं० जिस्से अन्तर न हो ।
नील, पु०ए०सं० एक बानर का नाम ।
नैऋत्यन, पु०ब०सं० राक्षसों का नाम ।
नकुल, पु०ए०सं० अर्जुन का एक भाई ।

[प]

पङ्क, न०ए०सं० चहला, कीचड़ ।
पटिस, पु०ए०सं० एक हथियार का नाम ।
परिघ पु०ए०सं० एक हथियार का नाम ।
पटल, पु०ए०सं० कनात ।
परितोष, पु०ए०सं० धीरज ।
पथित० पु०ए०हिं०भा० बटोही, राही, मुसाफ़र ।
पारथ, पु०ए०सं० अर्जुन ।
पितामह, पु०ए०सं० भीष्म ।
पुरन्दर, पु०ए०सं० इन्द्र ।
पञ्चभूत, न०ब०सं० काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह इन पांचों का नाम ।

पाण्डव, पु०व०सं० पाण्डु का वंश ।
प्रश्नोत्तर, पु०ए०सं० सवाल जवाब ।
पञ्चाली, स्त्री०ए०सं० द्रौपदी ।
प्रवाल, पु०ए०सं० मूंगा ।

[फ]

फरज़न्द, पु०ए०फ़ा० पुत्र, लड़का ।
फरसा, पु०ए०सं० परशुराम जी का अस्त्र ।

[ब]

बजह, स्त्री०ए०अ० मुजराईवस्तु ।
बलि, पु०ए०सं० दैत्यन में एक राजा ।
बलभद्र, पु०ए०सं० श्री कृष्ण जी के बड़े भाई थे ।
बसन्तललित, न०ए०सं० एक प्रकार का छन्द ।
बड़वानल, पु०ए०सं० समुद्र के तले जो अग्नि है ।
वपु, न०ए०सं० शरीर, अङ्ग, देह ।
वामन, पु०ए०सं० विष्णु का अवतार जो राजा बलि के द्वारे गये ।

बालि, पु०ए०सं० वानरों में एक राजा का नाम, अङ्गद का पिता।

वायुपुत, पु०ए०सं० हवा का पुत्र, हनुमान।

वारमुखी, स्त्री०ए०सं० वेश्या, पातुर।

वाहुलीक पु०ए०सं० पाण्डुके पुरखों में थे।

वायस, पु०ए०सं० काग, कौवा।

वितान, न०ए०सं० तम्बू।

विजया, ए० सं० एक प्रकार का छन्द।

विशासेन, पु०ए०सं० कर्ण के पुत्र का नाम।

विदुर, पु०ए०सं० पाण्डव के सौतेले भाई दासी पुत्र थे।

विदुष, पु०ए०सं० पण्डित।

विराट,पु०ए०सं० विराट देश के राजा का नाम।

विकर्ण, पु०ए०सं० दुर्योधन के एक भाई का नाम

वीरवर, पु०ए०सं० बड़ा बहादुर।

बुद्धिचक्षु, पु०ए०सं० धृतराष्ट्र।

वृकोदर, पु०ए०सं० भीम।

वृषसेन, पु०ए०सं० कौरव दलमें एक योधा का नाम।

वृद्धमान, न०ए०सं० वर्द्धवान नगर।

बेतपाणि, पु० ए० सं० बेत जिसके हाथ में हो ।
बेताल, पु० ए० सं० प्रेत, भूत ।
वेणु, पु० ए० सं० पुराने एक राजा का नाम ।
ब्रह्मरूपका, न० ए० सं० एक प्रकार का छन्द ।
ब्रह्मारण्य, स्त्री० ए० सं० एक बनका नाम ।
व्याघ्र, पु० ए० सं० बाघ, शेर ।

[भ]

भव, पु० ए० सं० संसार, दुनिया ।
भद्र, पु० ए० सं० आनन्द, कल्याण ।
भरद्वाज, पु० ए० सं० द्रोण के पिता ।
भारती, स्त्री० ए० सं० सरस्वती ।
भिण्डिपाल, पु० ए० सं० एक प्रकार का अस्त्र ।
भीष्म, पु० ए० सं० धृतराष्ट्र के चचा ।
भीम, पु० ए० सं० अर्जुन के एक भाई का नाम ।
भुवदेव, पु० ए० सं० विप्र, ब्राह्मण ।
भुजङ्गप्रयात, न० ए० सं० एक प्रकार का छन्द ।

कौरव दलमें एक योधा था ॥

भूरिश्रवा, पु०ए०सं० कौरव दलमें एक योधा था ॥
भृगुनन्दन, पु०ए०सं० परशुराम जी ।

[म]

मकराक्ष, पु०ए०सं० खर राक्षस के पुत्र का नाम ।
मगहा, पु०ए०सं० मगध देश का राजा ।
मन्दर, पु०ए०सं० पर्वत, पहाड़ ।
मघवा, पु०ए०सं० इन्द्र ।
मन्द, पु०ए०सं० शनिश्चर ।
मयनन्दिनि, स्त्री०ए०सं० मन्दोदरी ।
मदनमनोहर, न०ए०सं० एक प्रकार का छन्द ।
महिषामती, स्त्री०ए०सं० चन्देली ।
महत, पु०ए०सं० बड़ा, बृहत ।
मानधाता, पु०ए०सं० पुराने एक राजा का नाम ।
मामूली, स्त्री०ए०अ० नैबन्धिक, मुकर्र र ।
मालिनी, स्त्री०ए०सं० एक प्रकार का छन्द ।
मुगरा, पु०ए०सं० एक प्रकार का अस्त्र ।
मुण्डमाली, पु०ए०सं० सदाशिव, महादेवजी ।

मुण्डमाल, स्त्री०ए०सं० मुण्डन की माला।
मूरि, न०ए०सं० सजीवनि।
मृणाली, स्त्री०ए०सं० कमल की नाल।
मोदक, न०ए०सं० एक प्रकार का छन्द।

[य]

ययाति, पु०ए०सं० पुराने एक राजा का नाम।
यादव, पु०ए०सं० यदु का वंश।
युधामन्यु, पु० ए० सं० दुर्योधन का एक भाई था।
युधिष्ठिर, पु०ए०सं० पांडु के बड़े पुत्र।

[र]

रविनन्दन, पु०ए०सं० कर्ण।
रजश्रवत, पु०ए०सं० स्त्री जब मास धर्म सेहो।
रासभ, पु०ए०सं० गर्द्दभ, गदहा।
रिद्धि, स्त्री०ए०सं० ऋद्धि मादिक।
रूपसेन, पु०ए०सं० बर्द्दवान का राजा था।

[ल]

लघुपतनक, पु०ए०सं० एक कौवा का नाम।

लक्षणकुमार, पु० ए० सं० दुर्योधन के पुत्र का नाम।
लावण्य, न० ए० सं० सलोना, निमकीन।

[श]

शकुनी, पु० ए० सं० दुर्योधन का मामा था।
शपथ, पु० ए० सं० सौगन्ध, क़सम।
शतरञ्ज, स्त्री० ए० अ० एक प्रकार के खेलकी वस्तु।
शल्य, पु० ए० सं० युधिष्ठिर का मामा था।
शिवा, स्त्री० ए० सं० सियारी।
शिशुपाल, पु० ए० सं० चन्देली का राजा था।
शशिविन्दु, पु० ए० सं० दुर्योधन के एक भाई का नाम।
शायर, पु० ए० अ० कवि।
शाखाविलासी, पु० ए० सं० वानर, बन्दर।
शायक, पु० ए० सं० बाण, तीर।
शैल, पु० ए० सं० पर्व्वत, पहाड़, दुर्योधन के एक भाई का नाम।

शुक, पु० ए० सं० तोता।
शोक, पु० ए० सं० दुःख॥

श्रम, पु०ए०सं० कष्ट, मेहनत ।
श्रीफल, पु०ए०सं० नारियल ।
शंव, पु०ए०सं० एक दैत्य का नाम ।

[स]

सगर, पु०ए०सं० अयोध्या के एक राजा का नाम ।
सत्वर, पु०ए०सं० बहुत जल्द ।
सवैया, पु०ए०हिं०भा० एक प्रकार का छन्द ।
समुदाय, पु०ए०सं० समूह, मण्डली, झुण्ड ।
सागर, न०ए०सं० समुद्र ।
सायकी, पु०ए०सं० देव, देवता ।
साधु २, स्त्री०ए०सं० उत्तम, सुन्दर, मनोहर ।
सिद्धि, स्त्री०ए०सं० अणिमादि कादि आठ ।
सिविर, न०ए०सं० स्थान, डेरा, ठहरने की जगह ।
सुदामा, पु०ए०सं० एक ब्राह्मण का नाम, कृष्णमित्र ।
सुन्दरी स्त्री०ए०सं० सुन्दर रूपवान, एक प्रकार का छन्द ।
सुवेस, न०ए०सं० अच्छा भेष, दुर्योधन का एक भाई था ।

सुरनायक, पु०ए०सं० इन्द्र ।

सृष्टि, स्त्री०ए०सं० संसार, दुनिया ।

सोमदत्त, पु०ए०सं० दुर्योधन के एक भाई का नाम ।

सैामित्र, पु०ए०सं० लक्ष्मिमण जी ।

सैन्धवपति, पु०ए०सं० सिन्ध देश का राजा ।

संयुक्त, न०ए०सं० एक प्रकार का छन्द ।

[ह]

हिरस, स्त्री०ए०अ० लालच ।

हीरा, न०ए०हिं०भा० एक प्रकार का छन्द ।

[क्ष]

क्षुद्रघण्टिका, स्त्री०ए०सं० कटिबन्ध, कमरबन्द ।
पटुका ।

क्षोभु, पु०ए०सं० व्यर्थ, नेमतलब ।

—०—